हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां
(सरल अध्ययन)

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी

का

सरल अध्ययन

(इन्टरमीडियेट कक्षाओं के लिये)

Shant Sharma
Hiremath

★

लेखक

सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'मधुकर'
एच० ए० वी० इन्टर कालेज, सहारनपुर

★

प्रकाशक

गोयल बुक डिपो, सहारनपुर

मूल्य पैसे

कहानीकारों की दृष्टि में कहानी ?

कहानी क्या है ? एक प्रश्न हृदय में उठता है। नित्य प्रति हम अनेक कहानीकारों की रचनाओं को पढ़ते हैं और रसास्वादन करते हैं। कहानी के बारे में यदि कहानींकारों के विचारों को हम जान लें तो कहानी क्या है प्रश्न का उत्तार हमें मिल जाता है । कहानी के विषय में निम्न विचार विशेष दृष्टव्य हैं :—

जीवन के किसी एक अङ्ग या मानव के एक भाव को प्रदर्शित करना ही कहानी है । —प्रेमचन्द

आख्यायिका एक निश्चय लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटकीय आख्यान हैं श्यामसुन्ददास

पाठक पर एक ही प्रभाव डालने वाला संक्षिप्त रचना कहानी है ।
—एडगर एलिन पो

बीस मिनट में पढ़ी जाने वाली रचना को कहानी कहते हैं ।
—एच० जी० वेल्स

कहानी एक घोड़े की तरह है । आदि और अन्त इसके दो मुख्यतम पहलू हैं । —एलरी सेजविक

घटित घटना विशेष का इतिहास कहानी है । वेकर

कहानी शुद्ध कला की वस्तु है। संक्षिप्त कहानी का आवश्यक भूषण है ।
—अज्ञात

संकेत (Suggestion) और (Echo) ही कहानी का जीवन हैं ।
—हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां

38

हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां

सरल अध्ययन

प्रश्न १:—हिन्दी साहित्य में कहानी का क्रमागत विकास समझाइये ?

उत्तर—नन्हा सा शिशु जब रोने लगता तो चुप होने का नाम ही नहीं लेता। तब बूढ़ी दादी उसे अपने अङ्क में लिटाकर, चांद में चरखा कातती हुई नानी, परियों अथवा राजकुमारों या दादा-परदादाओं के शौर्य के किस्से सुनाती और नन्हा निद्रा देवी के संग चुप हो आश्चर्य कीं दुनियां में विचरण करता हुआ सो जाता। नन्हा जब बड़ा हो जाता तब वह अपने बेटों-पोतों को यही किस्से सुनाता। इस प्रकार ये किस्से सुनते-कहते बन जाते हैं कहानी! कहानी का जन्म कब हुआ यह किसी को पता नहीं। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जिस दिन पहली दादी और पहले पोते का जन्म हुआ होगा अवश्य ही कहानी भी जन्म ले चुकी होगी।

"कहानी दुनियां की सबसे पुरानी वस्तु है इसलिए आश्चर्य नहीं कि इसका आरम्भ उसी समय हो गया हो जब मनुष्य ने घुटनों के बल चलना सीखा था।" रिचर्ड बर्टन का यह कथन वास्तव में सारगर्भित एवं युक्ति संगत प्रतीत होता है। जिस प्रकार विश्व की रचना कब हुई थी ठीक उसी प्रकार कहानी का उद्भव कब हुआ दोनों प्रश्न एक दूसरे के पूरक दिखाई पड़ते हैं।

हिन्दी कहानी यों तो आदि काल से पूर्व भी प्रचलित थी, परन्तु केवल मौखिक रूप में। लिखित रूप में "रानी केतकी की कहानी या" उदयभान चरित्र" नामक कहानी के कथाकार श्री इन्शा अल्ला खां के सिर पर ही हिन्दी में प्रथम कहानी लिखने का सेहरा बंधता है। इस प्रकार से ज्ञात होता है कि हिन्दी की इस प्रथम कहानी का रचना काल सन् १८०३ है। परन्तु साहित्यिक रूप में किशोरी लाल गोस्वामी की 'इन्दुमति' गिरजादत्त बाजपेयी की पण्डित और पण्डितानी' तथा शुक्ल की 'ग्यारहे वर्ष का समय' आदि रचनाएं ही सर्वप्रथम प्रकाश में आई। अतएव यह कहना अत्यधिक कठिन है कि

साहित्यिक दृष्टि से हिन्दी में कौनसी कहानी को प्रथम मौखिक कहानी कहा जाये। तदन्तर अन्य भाषाओं की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद होता रहा और इस प्रकार हिन्दी कहानी विकास की ओर बढ़तीं गई।

हिन्दी में कहानी का विकास बड़ी ही तीव्रता से हुआ। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना' तथा भारतेन्दु की 'स्वर्ग में विचार सभा का आयोजन अपने समय की विशेष कहानियों में गिनी जाती हैं। इस प्रकार कहानी का प्रथम चरण समाप्त हो गया।

दूसरे चरण में प्रसाद जी का स्थान आता हैं। प्रेमचन्द जी को जिस प्रकार उपन्यास सम्राट कहा है उसी प्रकार हिन्दी जगत ने 'प्रसाद' को भी कहानी सम्राट के नाम से पुकारा। इसी पर दूसरे चरण को प्रसाद युग' भी कहा गया। 'प्रसाद' जों ने इन्दु' नाम से मासिक पत्र निकाल कर नवोदित कथाकारों के लिए मार्ग बना दिया। प्रसाद जी की 'उर्वशी' तथा 'ग्राम' नामक सुरुचि पूर्ण कहानियां इसी पत्र में सन् १९०९के लगभग प्रकाशित हुई। इन्हीं के समकालीन जी० पी० श्रीवास्तव ने व्यंग्य एवं हास्यपूर्ण कहानियां लिखकर अपना निजी स्थान वना लिया। विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक की 'रक्षा-वन्धन' कहानी ने अत्यधिक सफलता प्राप्त की। तदन्तर ज्वालादत्त शर्मा की मिलन कहानी प्रकाश में आई। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी तो केवल तीन कहानियां लिखकर ही अमर हो गये। उनकी तोनों कहानियां 'उसने कहा था' 'बुद्धू का कांटा' तथा 'सुखमय जीवन' ने असीम सफलता के साथ पाठकों के हृदय में अपना अनोखा स्थान वना लिया।

'प्रसाद' के वाद महान कलाकार मुन्शी प्रेमचन्द को हिन्दी कहानी में अद्वितीय स्थान प्राप्त करने का श्रेय मिला। आरम्भ में प्रेम चन्द उर्दू में लिखा करते थे। तत्पश्चात् उन्होंने भी हिन्दी की सेवा आरम्भ की। उनकी प्रथम हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर का' प्रकाशन हुआ। शनैः शनैः कहानी कुसुम सी विकसित होती गई। प्रेम चन्द्र के समय में अनेक नवीन कहानीकारों का उदय हुआ। इस तीसरे चरण में यथार्थवाद एवं आदर्शवाद का समन्वय करके कहानोकारों ने कहानियां लिखी। इस समय की कहानियों में कोरी कल्पना का उड़ान नहीं था अपितु उनमें छिपी हुई थी समाज की हीन दशा

और छिपा हुआ था उसमें वहुतेरों का पीड़न। कलम के सिपाही प्रेमचन्द ने कहानी को सामान्य रूप से प्रदान किया। इस प्रकार अनेक कहानीकारों को लाने में प्रेमचन्द ने महानतम कार्य किया है। आचार्य चतुर सैन, सुदर्शन जी तथा ज्वालादत्त सरीखे महान कथाकार प्रेमचन्द जा ही की देन है।

प्रेमचन्द जी के वाद हिन्दी का चौथा चरण अर्थात् वर्तमान युग आरम्भ हुआ। इस युग के कलाकारों के नवीनता लाने का प्रयास किया। कहानी कला अपने चरम रूप को प्राप्त कर चुकी है। विभिन्न प्रकार के लेखक नये-नये विषय लेकर कहानी क्षेत्र में इसी काल में आए हैं। वर्तमान में कहानियों में मनोविज्ञान की अत्याधिक पुट दी गई है। वर्तमान युगीन लेखकों ने मानव जीवन को जितने निकट से देखा और परखा अन्य किसी युग में नहीं। वे सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार को बड़ी ही पैनी दृष्टि डाल कर कहानी में रखते हैं। इस प्रकार की कहानियां लिखने में जैनेन्द्र जी का नाम प्रथम स्थान प्राप्त करता है।

अज्ञेय की लेखनी साम्यवाद अर्थात् साहित्य में प्रगतिवाद के रंग में रंगी हैं। उनकी कहानी का शब्द-शब्द विदोह की भावना प्रगट करता हुआ दिखाई पडता है। कहानीकार यशपाल तथा विष्णु प्रभाकर भी इसी श्रेणी के लेखक माने जाते है। वर्तमान में देशभक्ति सामाजिक चित्रण, ऐतिहासिक तथा रूढ़ि विरोधी कहानियों का विशेष रूप में प्रकाशन हुआ है। पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र' सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' राजेन्द्रसिंह दी आदि वर्तमान युग के प्रसिद्धत्तम कहानी कारों में गिने जाते हैं।

साहित्य में जब राजनीति तथा व्यवसाय आदि प्रपंच आ जाते हैं तो साहित्य में कुछ हीनता सी दृष्टगोचर होती है। वर्तमान युग से इन दोनों बातों के आ जाने से हिन्दी कहानी भी कुछ दषोपूर्ण होने लगी है। तो भी सरस्वती के अनेक सच्चे साधक इन दोनों अवगुणों को ताक में रख कर सुन्दर एवं सुरुचि पूर्ण कहानियां लिखकर सत् साहित्य का निर्माण कर रहे हैं।

आदि और अन्त — हिन्दी साहित्य के गद्य में जितनी उन्नति कहानी ने की है अन्य किसी अङ्ग ने नहीं की। लगभग एक शताब्दी तक अथक

परिश्रम करती हुई कहानी परियों, राजकुमारों, वीरों के शौर्य को साथ लिये खण्डहरों रेगिस्तान की रेत और हिमालय की ऊंची चोटियों को पार करती हुई आज मानव जीवन के दर्पण के रूप में हमारे सामने है। यह दर्पण जीवन के संघर्षों एव परिस्थितियों को दिखाता हुआ अवश्य ही प्रतिबिम्बित होता रहेगा। वर्तमान् कथाकारों से ऐसी कामना है।

प्रश्न २—कहानी की प्राचीनता सतर्क समझाइये। नवीन एवं प्राचीन कहानी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"आधुनिक हिन्दी कहानी वर्तमान युग के गद्य का एक प्रमुख अंग है, यह अपने उद्भव यथा विकास से प्रचीन भाषाओं तथा संस्कृत आदि की कथाओं की शृंखला में पूर्णतया स्वतन्त्र एवं नूतन कड़ी है।" इस कथन की आलोचना कीजिये।

उत्तर-कहानी का जन्म-बहुत पुरानी बात है सृष्टि का निर्माण हुआ और मानव पृथ्वी पर उत्तर आया। बस इस मनुष्य की उत्पत्ति ही कहानी बन गई। किसी ने उसे वैज्ञानिक रूप में देखा, किसी ने ऐतिहासिक रूप में तो किसी न उसे महान शक्ति का चमत्कार समझा प्रथम मनुष्य का जन्म कब हुआ, कैसे हुआ और क्यों हुआ ? आदि प्रश्न बनते गए। और जैसे-जैसे प्रश्न अधिक बने वैसे-वैसे मनुष्य के जन्म लेने की कहानी भी बढ़ती गई। आज भी अनेक खोजों के ही जाने पर भी यह निश्चय नहीं हो पाया है कि कब मनुष्य पृथ्वी पर आया कुछ भी हो यह तो कहना गलत प्रतीत नहीं होता कि जिस दिन प्रथम मनुष्य स्वर्ग से चलकर धरती पर आया होगा निश्चय ही अपने साथ वह अपने जन्म की कहानी भी लेकर आया होगा। जैसे-जैसे मानव का विकास होता गया वैसे-वैसे कहानी कला भी विकसित होती गई। यह कहना युक्ति संगत ही प्रतीत होता है कि साहित्य में सर्व प्रथम कहानी की उत्पत्ति हो हुई होगी। कहानी और साहित्य का चोली-दामन का साथ है। यदि कहा जाए कि कहानी है ही नहीं तो फिर साहित्य भी कुछ नहीं कहना गलत प्रतीत नहीं होता है।

संस्कृत भाषा और कहानी—विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत एवं सबसे प्राचीन साहित्य संस्कृत साहित्य है, यह कथन विश्व सत्य एवं सर्वमान्य है। ऋगवेद विश्व की प्राचीनत्तम पुस्तक मानी जाती है जिसकी भाषा संस्कृत है। इस पुस्तक में सेप, उर्वशी, शुनः आदि संक्षिप्त कथाएं वर्णित हैं। उपनिषदों के सूयक भी एक प्रकार से लघु कथाओं का ही एक रूप है। महाभारत में वर्णित अनेकानेक प्रसंग कहानियां नहीं तो क्या है। पुराणों में अनेकों स्थानों पर तरह-तरह की कहानियां दी हुई हैं। प्राकृत भाषा में वृहत्कथा नामक कथा संग्रह गुणाढ्य द्वारा लिखी गई वहुत पुरानी पुस्तक है जो अप्राप्य हैं। वृहत्कथा श्लोक. पंचतन्त्र वैताल पंच विशातिका, दशकुमार चरित्र आदि द्राचीन कथाओं के लोक प्राचीन कथाओं के लोक प्रसिद्ध कहानी-संग्रह है। वौद्धों की जातक कथायें भी कहानी कला के विकास के लिये वहुत महत्वपूर्ण रही हैं। इन कथाओं में जीवनके विविध पक्षों का वर्णन किया गया है। महाभारत युगीन कथायें विशेष रूप से नीति, धर्म सदाचार आदि मनुष्य के गुण धर्म के ऊपर लिखी गई हैं। जैन धर्म की कथायें अपभ्रंश भाषा में लिखी गई प्रसिद्ध एवं नीति निर्देशक कथायें हैं।

कहानी में हिन्दी का प्रचलन—तदन्तर राजपूत वीरों के वलिदान और शौर्य की कथाएं चारण काव्य में सजाकर गाने लगे। ये चारण जहां युद्ध क्षेत्र में जाकर भुजा फड़काने वाले गीत गाया करते थे वे ही चारण और अपनी लेखनी से राजकुमार और राजकुमारियों के हृदय के भावों को शब्दों की लय में वान्ध सरस झंकार किया करते थे। 'आल्हा ऊदल,' की इतिहास प्रसिद्ध घटना ने एक कथा का रूप ले लिया। लाखों कण्ठों से गांव की चौपालों में ऐसी अनेक कथायें गूंज उठी।

तदन्तर तलवारें उठ खड़ी हुई यवन समूह ने आर्य वृत्त पर आक्रमण कर दिया और धीरे-धीरे यहां एक सम्प्रदाय एंव एक नवीन संस्कृत का आविर्भाव हुआ। वह संस्कृति थी इस्लाम इसी समय सूफी मत का अत्याधिक प्रचार हुआ। सूफी मतानुसार लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेमकी प्रथम सीढ़ी है। इसीलिए प्रसिद्ध सूफी कवि जायसी ने अपने ग्रन्थ पद्मावत में काव्य रूप

में राजा रत्नसैन तथा 'पद्मावती' की प्रेम कथा को विषय रूप में चुना है। 'पद्मावती' इसमें साध्य के रूप में तथा राजा रत्नसैन साधक के रूप में वर्णित है। वैसे अश्लील प्रेम पर आधारित 'किस्सा तोता मैना तथा 'गुलवकावाली' आदि प्रेम कथाओं को कथाकारों ने लेखनीवद्ध किया है।

'दो सौ वावन वैष्णवन की वार्ता' एवं 'चौरासी वैष्णव की वार्ता नामक प्रसिद्ध ग्रन्थों में वैष्णव भक्तों की जीवन तथा धर्म सम्वन्धी कथायें संग्रहित है। 'गोरा वादल की कथा' वलिदान एवं परिवारिक प्रेम से ओत प्रोत कथा है। तत्पश्चात् नासिकेहोपख्यान नामक कहानी काफी प्रसिद्ध हुई। और इसके वाद कुछ विद्वानों के अनुसार हिन्दी की प्रथम कहानीअर्थात् 'रानी केतकी की कहानी' हिन्दी साहित्याकाश में ध्रुवपद पर आसीन हुई। इस कहानी के जनक के रूप में 'इंशा अल्लाखां' हिन्दी के प्रथम कहानीकार के रूप में हमारे सामने आते हैं।

इस प्रकार कभी मन्थर कभी तीव्र गति मे चलती कहानी निरन्तर आगे वढ़ती रही है। मानव विकास के साथ-साथ कहानी कला भी स्वयं ही विकसित होती गई। कल की कहानी और आज की कहानी में क्या अन्तर है यह जानना आवश्यक है। इसके लिए पुरानी तथा नवीन कहानी कला के वारे में ज्ञान होना अनिवार्य है। दोनों की निम्न विशेषतायें विशेष रूप से दृष्टव्य हैं :—

प्राचीन कहानी

(१) प्राचीन कथायें सर्वथा कल्पना प्रधान होती थी। अलौकिक पुरुष इस कहानी के पात्र होते थे तथा अलौकिक एवं आश्चर्य से भरी रोमांचपूर्ण घटनाएं कहानियों की कथाएं होती थी। इन कथाओं में मानव मस्तिष्क उलझ सा जाता था।

(२) पात्रों का सम्वन्ध राज परिवार अथवा उच्च समाज के ठेकेदारों से अवश्य होता था।

(३) आश्चर्य में जो कहानी जितना डुवा सकती थी उतना ही श्रेष्ठ मानी जाती थी।

(४) 'पद्मावती' ग्रन्थ में तोते और रत्नसैन की वार्तालप सिद्ध करता

है कि मनुष्य जानवरों की भाषाएं जानता था। और ये जानवर मनुष्य की यथा समय सहायता करते थे।

(५) प्राचीन कहानी धर्म, नीति तथा प्रेम प्रसंगों से पूर्ण होती थी।

(६) लोक कल्याण ही इस समय की प्रायः प्रत्येक कहानी के उद्देश्य बनाए रक्खा। पाठकों की रुचि पर ध्यान नहीं दिया गया।

(७) मस्तिष्क और हाथ पर बनी लकीरों पर ही इन कहानियों की प्रत्येक पात्र प्रायः चक्कर काटता रहता था। बुद्धि सदैव ही भाग्य के सामने हारती रही हैं श्रम का कुछ मूल्य नहीं समझा गया।

(८) घटना प्रधान होने के कारण पाठकों में निरन्तर उत्सुकता जगी रहती थी। वह इस बात में मस्तिष्क लगाए रखता था कि अब क्या होने वाला है।

(९) कक्षा का विवरण इन कहानियों में दिया जाता था।

(१०) ये कहानियाँ मानव के बाह्य रूप का ही वर्णन कहती थी अन्त में जगत के मनो भावों तथा मनोविकारों आदि का इसमें कोई विशेष स्थान नहीं हैं।

(११) मनोवैज्ञानिक द्वन्द्वों को कहानी में कोई स्थान नहीं मिल सका है।

(१२) इन कथाओं को समाप्त करने के बाद पाठक ऐसा सोचता है जैसा कि उसे कुछ मिल गया हो।

(१३) प्रायः कथा का अन्त सुख में ही होता था अतएव पाठक को मनोरंजन प्रदान करने में ये कहानियां सदा सहायक रही हैं।

(१४) सरसता प्राचीन कहानी का विशेष गुण माना जाता था।

(१५) भाषा अलंकारिक थी।

(१६) कहानी कितनी भी बड़ी हो सकती थी।

आधुनिक कहानी

(१) आधुनिक कहानी मानव जीवन का दर्पण है जो सत्य के धरातल एवं लौकिक घटनाओं तथा लौकिक पुरुषों पर आधारित है। कहीं-कहीं कल्पना प्रधान हो गई है परन्तु इतना नहीं कि विश्वास ही न हो सके।

(२) वर्तमान की कहानी ने झूठे दिखावे को ताक में रख कर प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को पात्र के रूप में चुना है।

(३) नवीन कहानी में आधुनिकता की पुट के साथ ही मौलिकता भी प्राप्त है।

(४) मनुष्य के अतिरिक्त पक्षी तथा अन्य मूक प्राणियों का आज की कहानी में स्थान नहीं है।

(५) आज की कहानी का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को प्रतिबिम्बित करना मात्र है।

(६) पाठक वृन्द को उसकी रुचि के अनुसार सामग्री प्रदान करना आज का कहानीकार उचित समझता है।

(७) आज की कहानी का प्रत्येक पात्र कर्मयोग की साधना में रत्त है। वह खाली बैठना पसन्द नहीं करता। रूढ़ियों को जो कि सदियों से प्रचलित थी उसने तोड़ने का अत्यधिक प्रयास किया है।

(८) आज की कहानी भाव एवं विचार प्रधान होने के कारण पाठक को बरबस भाव में वह जाने और विचारों में खो जाने को बाध्य करती है।

(९) नवीन कहानियों में कथोपकथन पर विशेष बल दिया जाता है।

(१०) आज की कहानी चरित्र प्रधान है। इसमें मनुष्य के अन्तंजगत पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

(११) नवीन कहानी का प्रयास सदैव ही मनोवैज्ञानिक सत्य को दर्शाना रहा है।

(१२) आज की कहानी को पढ़ लेने के बाद पाठक प्राप्त करता सा नही अपितु कुछ खोता सा अनुभव करता है।

(१३) नवीन कहानी आरम्भ में कुछ सुख पूर्ण होती है मध्य और अन्त में इन कहानियों में अश्रुपात के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया जाता।

(१४) नए कहानीकार सरलता पर अधिक बल देते हैं।

(१५) सरल भाषा को अपनाया गया है।

(१६) नवीन कहानी की सरलता इस ही बात पर निर्भर करती है कि इसमें थोड़े शब्द थोड़ी घटना तथा थोड़े पात्र हैं।

प्रश्न ३—उपन्यास और कहानी साहित्य के दो विभिन्न अङ्ग हैं एक नहीं सिद्ध कीजिए।

अथवा

उपन्यास और कहानी के तत्व एक होते हुए भी उपन्यास कहानी से भिन्न हैं। इस कथन की तार्किक विवेचना कीजिए।

हिन्दी साहित्य में जिस प्रकार महाकाव्य को खण्ड काव्य नहीं कहा जा सकता है ठीक उसी प्रकार उपन्यास को भी खण्ड काव्य नहीं कहा जा सकता। साहित्य में खण्ड काव्य की परिभाषा इस प्रकार की गई है कि "खण्डकाव्य भवेत काव्यस्यैक देशानुसारि च"। ठीक इस प्रकार कहानी भी जीवन के एक अङ्ग का दर्शन कराती है न कि सम्पूर्ण जीवन का। अतएव गद्य में उपन्यास जो पूर्ण जीवन से बंधा हो पद्य के महाकाव्य बराबर तथा कहानी में लघु प्रसंग होने के कारण इसे पद्य का खण्ड काव्य मान लेना अनुचित प्रतीत नहीं होता है। कहानी तथा उपन्यास में तत्व तो छः नहीं होते हैं परन्तु कहानी और उपन्यास दोनों में इन तत्वों की प्रकृति भिन्न होती है। ये तत्व निम्न हैं :—

कथावस्तु:—उपन्यास गद्य में महाकाव्य के समान है। जीवन की व्याख्या करना उसका प्रधान लक्ष्य होता है। इसमें मुख्य कथा एक होती हुई कई प्रासांगिक घटनाओं का समाधान करती हुई चलती है। इनमें संवेदनाओं का समष्टि होती है। वास्तव में उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। इसमें कथानक बढ़ाने तथा कौतुहल उत्पन्न करने लिए अनेक अन्तः कथाओं को स्थान दिया जाता है। इसमें मूल कथा वस्तु (जो कि नायक से सम्बन्धित होती है) के साथ ही प्रासांगिक कथा वस्तु भी निरन्तर चलती रहती है कथा वस्तु का मनोरंजक भी होना अत्यन्त आवश्यक है कहीं ऐसा न हो कि पाठक प्रासांगिक घटनाओं को पढ़ते-पढ़ते ऊब ही न जाये। कथा का प्रवाह प्रवन्ध रीति से निरन्तर आगे बढ़ता रहना चाहिए। कहानी उपन्यास से छोटी और एक भिन्न कृति है। कहानी युद्ध कला की वस्तु होती है। संक्षिप्तता कहानी का आवश्यक आभूषण है। इसमें एक संवेदना, एक घटना का वर्णन व्यंजनात्मक शैली में होता है। कहानी के आदि, मध्य

और अन्त में एक तथ्यता रहती है। व्यंजना को एक प्रकार से कहानी का उर भी कहा जा सकता है। कहानी आदि से अन्त तक एक ही समस्या को लेकर चलती रहती है। उपन्यास यदि विशाल पर्वत है तो कहानी मिट्टी के कुछ कण ही सही पर वह मानसिक भोजन अच्छा प्रदान करती है। इस प्रकार एक में कथा अनेक मोड़ों को पार करती हुई कंटकों में दामन उलझाती आगे बढ़ती है तो दूसरी सुन्दर और चिकने मार्ग पर फिसल कर आगे बढ़ती है। उपन्यास खाली दिमाग के लिए उपयुक्त है जब कि कहानी रेलगाड़ी हो या घर की छत, रसोई घर हो या कम्पनी गार्डन प्रत्येक स्थल पर पढ़ी जा सकती है।

पात्र:—पात्रों का चयन उपन्यास तथा कहानी दोनों में ही सोच समझ कर करना पड़ता है। उपन्यासकार को अनेक प्रासंगिक तथा अन्त: कथाओं से सम्बन्धित पात्रों को स्थान देना पड़ता है। क्योंकि उपन्यास में अनेक घटनाओं का वर्णन कथानक के विस्तार के लिये किया जाता है अतएव घटना से सम्बन्धित पात्र को भी स्थान देना आवश्यक हो जाता है। यही कारण है कि उपन्यास में कहानी की अपेक्षा अधिक पात्र होते हैं। कहानी में कथा का लघु रूप होने से थोड़े पात्रों से ही काम चल जाता है दूसरे अधिक पात्रों को कहानीकार विस्तार भय के कारण भी स्थान नहीं दे पाता हैं। अतएव कहानी में थोड़े ही पात्र आवश्यक होते हैं।

कथोपकथन :—कहीं-कहीं उपन्यास में उपन्यासकार पात्र के मुख से उन विचारों का प्रतिपादन करा देता है जो कि उसके अपने हैं। वहां वह पात्र का Mouth Speaker बन कर रह जाता है। उपन्यास में कथानक का विकास होने के कारण उपन्यासकार को इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है कि वह विस्तार भय पर ध्यान न देकर पात्र के चरित्र सभी गुणों अवगुणों को शब्दों में चित्रित करें। कहानीकार को इस विषय में पूरा-पूरी सावधानी रखनी पड़ती है। वह समझता है कि उसका उद्देश्य जीवन के सभी अङ्गों पर प्रकाश डालना नहीं है। अतएव वह पात्र चरित्र पर पूर्ण प्रकाश डालने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है क्योंकि उसे सदैव ही इस बात का भय बना रहा है कि कहीं कथानक में विस्तार न हो जाये और वह जीवन के

किसी भी एक प्रङ्ग विशेष को चित्रित कर देना ही अपना प्रधान लक्ष्य मानती है। वह स्वयं तो पात्र के मुख से मन चाहा एक शब्द भी कहलाने का अधिकारी नहीं। प्रसंग विशेष के लिए जितने शब्द आवश्यक हो उतने ही नाप तोल कर वह रख देता है। वैसे भी छोटे और बड़े चुटकीले सवाद कहानी के प्राण माने जाते हैं।

देशकाल—कहानी तथा उपन्यास वैसे तो दोनों ही में यह तत्व आवश्यक है तो भी कहानीकार को इसका विशेष ध्यान रखना पड़ता है। कहानी अथवा उपन्यास की घटना का किसी स्थान तथा समय से अवश्य ही किसी न किसी रूप में सम्बन्ध बना होता है। कुशल कहानीकार के लिये परम आवश्यक है कि वह देश और काल की सीमा लांघने का प्रयास न करे। उपन्यास में कई समय में घटित विभिन्न घनानाएं वर्णित की जा सकती है जब कि कहानीकार के लिये यह स्वतन्त्रता नहीं होती है। उसे तो केवल एक ही ऐसी घटना का वर्णन करना होता है जो कि एक ही समय एक ही स्थान पर हुई हो।

भाषा-शैली :—कहानी भाषा और कल्पना का तानावाना है। कहानीकार इन दोनों पर ही विशेष ध्यान देता है। वह सदैव ही इस बात का ध्यान रखता है कि थोड़े शब्दों में अधिक कह दे। सरल और सुबोध इन दोनों गुणों का भी वह कहानी में प्रत्येक स्थान पर समावेष करता रहता है। स्वयं कहानीकार अपने विचार तो क्या शब्द तक प्रदर्शित करने का अधिकारी नहीं है। उसके कुछ विशेष वाक्य होते हैं कुछ विशेष शब्द होते हैं जिनके सहारे मात्र से ही वह पात्रों का चरित्र चित्रण करता है। निरर्थक शब्दों के लिये कहानीकार की कलम नहीं होती है। वह तो वे ही शब्द काम में लाता है जो अधिक से अधिक उपयोगी हों. इस सब का कारण कहानीकार के लिए यह बन्धन है कि वह कहानी में विस्तार न आने दे। उपन्यासकार के लिये ऐसा कोई बन्धन नहीं होता है वह यदि चाहे तो उपन्यास में कथोपकथन अधिक शब्द भी प्रयुक्त कर सकता है, वह अपने विचार भी पात्र के मुख से प्रगट करने का अधिकारी है। वह प्रत्येक प्रसंग को विस्तृत रूप में चित्रित करने के कारण पात्र का चरित्र चित्रण भी विस्तृत एवं सरलता से कर लेता

है। कहानीकार शब्दों के नवीन रूप, मुहावरों तथा महान् विचारकों की उक्तियों को भी अपनी कहानी में स्थान दे सकता है। उपन्यासकारों को भी ऐसी ही स्वतन्त्रता मिली होती है। दोनों को इस बात का सदैव ध्यान रखना पड़ता है कि शब्द चयन ऐसा हो कि भाषा निरन्तर सरल, पात्रानुकूल, भावानुकूल तथा स्थान एवं समयानुकूल बनी रहते भी उनकी कृति सफलता प्राप्त कर सकती है।

उद्देश्य:—प्रत्येक कहानीकार एक उद्देश्य को लेकर चलता है जिसका निर्वाह करना ही वह अपना कर्तव्य समझता है। कहानी का उद्देश्य कहानी में ही निहित रहता है। कहानीकार को इसे बताने की आवश्यकता नहीं होती है। पाठक स्वयं जान लेता है कि कहानी किस उद्देश्य को लेकर लिखी गई है। क्योंकि बताया गया है कि कहानी जीवन की व्याख्या है. तो निश्चित कि उसका उद्देश्य भी कुछ न कुछ अवश्य हो रहा होगा। उपन्यास कहानी का विशाल रूप है। कहानी जीवन की कोई एक घटना अथवा समस्या के समाधान हेतु लिखी गई संक्षिप्त रचना हैं। उपन्यास में अनेक समस्याएं जो कि जीवन प्रतिदिन ही उत्पन्न होती हैं उन अनेक समस्याओं को हल किया जाता है। जीवन का सर्वांगीण चित्र उपस्थित करता है। वह अपने कला चातुर्य से मानव जीवन की पूर्ण व्याख्या रखता है परन्तु महान कहानीकार कुछ ही शब्दों तथा वाक्यों से मर्म को छू लेता है और एक ऐसा संकेत छोड़ जाता है जिससे पाठक स्वयं समस्या का समाधान कर लेता है।

उपर्युक्त विवेचन स्पष्ट करता है कि प्राचीन कहानी भले ही उपन्यास का एक अङ्ग रही हो। परन्तु आधुनिक कहानी तथा उपन्यास के एक ही तत्व होते हुए भी वे एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। कहानी और उपन्यास हिन्दी के दायें तथा बाएं कर हैं।

प्रश्न ५—कहानी तथा एकांकी में क्या अन्तर है? संक्षेप में बताइये।

उत्तर:—कहानी तथा एकांकी में निम्न विषमताएं तथा समता विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं:—

कहानी और एकांकी नाटक में अन्तर

विशेषताएं :-

एकांकी नाटक

(१) कथोपकथन के विना एकांकी को निष्प्राण माना जाता है क्योंकि यही कथानक का विस्तार करता है।

(२) इसमें नाटककार पात्रों की वेशभूषा आदि पर विशेष ध्यान देता है। हावभाव से वह भाव प्रदर्शित करता है।

(३) प्रत्येक बात पात्र ही कह सकता है स्वयं नाटककार को इसका अधिकार नहीं है।

(४) एकांकी दृश्य काव्य है। अभिनय द्वारा ही यह समझा जा सकता है।

(५) एकांकीकार कुछ घटनाओं का पूर्व ही निर्देश कर देता है। स्वगत भाषण शैली भी एकांकीकार यथा स्थान अपना सकता है।

(६) इसके लिए मंच वनाना आवश्यक है।

कहानी

(१) कथोपकथन कहानी में मुख्य न होकर सहायक रूप में चलती है। वैसे कथोपकथन कहानी में आवश्यक भी नहीं है।

(२) कथानक के प्रति कहानीकार को स्वयं ही सव कुछ कहना पड़ता है।

(३) कहानीकार इसके लिए स्वतन्त्र होता है।

(४) कहानी श्रव्य काव्य। सुनने मात्र से इसका रसास्वादन किया जा सकता है।

(५) कहानीकार को इसकी छूट नहीं होती है।

(६) कहानी का आनन्द विना मंच के ही लिया जा सकता है।

समता—

(१) आकार में दोनों ही लघु होते है। दोनों को ही अधिक से अधिक हम बीस मिनट में पढ़ सकते हैं।

(२) घटनाएं तीव्र गामी तथा संक्षेप में दोनों में ही होती हैं।

(३) न तो एकांकी और ही कहानी में जीवन की व्याख्या अथवा अनेक समस्यायों का समाधान होता है। दोनों ही एक विशेष संकेत मात्र छोड़ जाता है।

प्रश्न ५—कहानी के तत्त्वों का विवेचन संक्षेप में कीजिए।

साहित्य का कोई सा भी अंग क्यों न हो। उपन्यास हो चाहे कहानी महा काव्य हो या खण्ड काव्य सभी की रचना विधान के लिए कुछ न कुछ अंग आवश्यक होते हैं। लेखक जिन आधारों पर कल्पना का सहारा लेकर कहानी लिखता है, विद्वानों की दृष्टि में वे छः हैं। इस प्रकार जो छः तत्व किसी कहानी की रचना के लिए आवश्यक माने गए हैं वे निम्न प्रकार हैं :—

कथावस्तु—कहानीकार मानव जीवन की किसी एक घटना विशेष को चुन लेता है। तत्पश्चात् कहानीकार अनुभवों, क्रियाकलापों तथा घटना व इस प्रकार से प्रस्तुत करता है कि एक क्रम सा बन्ध जाता है और इसी प कथानक या कथावस्तु का विस्तार हो जाता है। कल्पना की पुट वेकरर व कहानी में पाठकों की रुचि बनाये रखने का निरन्तर प्रयास रखता है, अनावश्यक विस्तार भी कथावस्तु को विस्तृत कर देता है जिससे अनचाहे ह पाठक ऊंचा सा जाता हे इसमें प्रासांगिक तथा अन्तंकथाओं को कहानीका जबरदस्ती ठूंसने का प्रयास करता है। कथावस्तु का विकास अंत से ल तथा प्रवाह पूण होगा तभी कहानी होगी अन्यथा नहीं। कथावस्तु पांच वात आपेक्षित होती है—(१) आरम्भ (२) विकास (३) कौतुह तथा चपम सीमा (४) पतन (५) अन्त।

पात्र सीमित पात्रों की संख्या वाली कहानी को ही श्रेष्ट कहानियों गिना जाता है। अधिकतर पात्रों की संख्या एक अच्छी कहानी में चार के भग होनी चाहिये। पात्रों की संख्या वृद्धि से मात्रों के कथोपकथन में वृ हो जाती है जिससे कथा का अनावश्यक विस्तार हो जाता है और इस प्रक कहानी की गति मन्थर हो जाती है।

कथोपकथन—एक पात्र के दूसरे पात्र से हुए वार्तालाप को कथोपकथ

कहते हैं। श्रेष्ठ कहानी में संवाद छोटे तथा पूर्ण होने चाहिये। संव द कहानी के प्राण होते हैं। अतएव यदि पात्रों के संवादों में ही अस्वाभाविकता आ गई तो निश्चय ही पूरी कहानी में अस्वाभाविकता आ जायेगी। एवं कहानीकार अपनी कृति की सफलता के लिए संवादों में संक्षेप, सरलता आदि गुणों को अपनाना चाहिये।

देशकाल—एक सफल कहानी में एक समय तथा एक ही स्थान पर होने वाली घटना का वर्णन होना चाहिये। अनेक समयों पर होने वाली घटनाओं के वर्णन करने में एक तो कथावस्तु मन्थर पड जाती है। दूसरे उसमें अनेक प्रसगों के उलझाव के कारण पाठक का उचित मनोरंजन नहीं हो पाता है।

भाषा शैली —कहानी मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन है। पाठक मनोरंजन तभी प्राप्त कर सकता है जबकि कहानी सरल भाषा में लिखी गई हो। सरलता एवं प्रसाद गुणों से पूर्ण कहानी ही सफलता प्राप्त कर सकती है जिस कहानी में कहानीकार चुन-चुन कर कठिन शब्दों को ले आता है। प्राय: देखा गया है कि पाठक उन कहानियों के पृष्ठ विना पढ़े ही मोडने के लिये बाध्य हो जाता है। भाषा में चित्रात्मक एवं सजीवता होने पर ही कहानी की सफलता या असफलता बनी रहती हैं। भाषा कहानीकार को ऐसी अपमानी चाहिये जिसमें सरल, सुबोध तथा स्वाभाविकता नादि गुण व्याप्य हों प्रत्येक कहानीकार कहीं न कहीं निश्चय ही अपनी छाप छोड देता है। प्रत्येक कहाना की अपनी निजी शैली होती है। वैसे आजकल कहानियों में निम्न पांच शैलियों का प्रयोग अधिकाधिक रूप मे होता है :—

(१) वर्णनात्मक अथवा इतिहास शैली
(२) पत्रात्मक शैली
(३) आत्मकथात्मक शैलीं
(४) ड़ायरी शैली
(५) कथोपकथन अथवा संवाद शैली

उद्देश्य —कहानीकार की प्रत्येक रचना के पीछे कोई न कोई ऐसी भावना अवश्य छिपी रहती है जो कथावस्तु के विस्तार के साथ साथ अन्त

में स्वयं प्रगट हो जाती है। यही कहानी का उद्देश्य भी कहा जाता हैं। एक सफल कहानी में यह आवश्यक होता है कि कहानीकार को कहानी का उद्देश्य स्वयं बताने की आवश्यकता न पड़े अतएव उद्देश्य की वात उसे पूर्णतया पाठकों पर छोड़ देनी चाहिए जिससे कि पाठक कहानीकार द्वारा उद्देश्य बताये जाने पर कहीं यह न समझ बैठे कि कहानीकार ने उसे अल्प बुद्धि का मनुष्य समझा है।

प्रश्न ६—नवीन कहानी की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

अथवा

कहानी क्या है? वर्तमान कहानी की विशेषताओं का विवेचन कीजिये।

उत्तर—प्रतिभास असंख्य कहानियों का प्रकाशन उनकी लोकप्रियता एवं विकास का द्योतक है। बस में, रेलगाड़ी में, ट्राम में। होटल में कहीं भीं देख लीजिए हर ओर पाठक कहानी का रसास्वादन अवश्य ही कर रहा है। पढ़ी भी क्यों न जाए कहानी भी तो साहित्य का प्रमुख अंग है।

परिभाषाः—कहानी शब्द का अर्थ सारे कहानी संसार से न होकर केवल आधुनिक कहानी से है। आधुनिक कहानी जीवन की वास्तविकता को प्रतिविम्बित करने वाला दर्पण है। स्वाभाविकता एवं मनोवैज्ञानिकता आज की कहानी के दायें तथा बायें हाथ हैं। कल्पना के रगों से, शब्दों की तूलिका से आधुनिक कहानीकार ऐसा सुन्दर चित्र खींचता है कि पाठक कौतूहल के रसातल में डूबता-डूबता सोचने लगता है कि महान आश्चर्य चित्र खींचा है कहानीकार ने, कहानी को परिभाषा की सीमा में बांधना अत्यन्त ही कठिन कार्य है। पश्चिम को आधुनिक कहानी का जनक कहना ही न्याय संगत प्रतीत होता है। अतएव यह जानने के लिये कि आधुनिक कहानी क्या है इसके लिये पश्चिम के विचारकों के विचारों को जान लेना आवश्यक होगा। निम्न विचार आधुनिक कहानी के बारे में विशेष रूप से दृष्टव्य हैः—

'A story should be a finished product of art with a beginning a middle and an end.'

Somerest Mougham

(कहानी शुद्ध कला की उत्पत्ति है, जिन में आरम्भ, मध्य तथा अन्त होता है)

"A short story should have neither beginning nor end one must write about simple things, how Petter Seminovith married Mana Invanonna. That is all.
—Chekhov

(एक कहानी में न आदि होना चाहिए और न अन्त। एक कहानीकार को साधारण चीजों के बारे में लिखना चाहिए। पीटर ने मैना से विवाह किया इतना कहना काफी है।

In the whole composition there should be no word written of which tendency, direct or indirect is not one preestavlished design.
—Edgar Allanpoe

(सम्पूर्ण कहानी में कोई भी शब्द ऐसा नहीं लिखा होना चाहिए जिसका स्वभाव प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे पूव नियोजित योजना से मेल न खाता हो)।

"कहानी परस्पर संबद्ध घटनाओं का वह क्रम है जो किसी परिणाम पर पहुंचता है।"
—मि० फोरेस्टर

"जो कुछ मनुष्य करे वही कहानी है।"
—ह्यू वाकर

"कथाकार यदि प्रवीण और कला कुशल है तो वह अपनी कहानी में पहले कोई घटना-चक्र देकर फिर उसमें अपने विचारों की कड़िया डाल देने में गलती कभी न करेगा। सतर्कता से अपने लक्ष्य और प्रभाव की कल्पना करेगा। और उसका प्रभाव और लक्ष्य सर्वाधिक सफलता से अर्जित करने में समर्थ हों।
—वालपोल

"कहानी जीवन भर की प्रतिनिधि नहीं, उसकी कुछ दिशाओं का ही वर्णन है।"
—स्टीवेंसन

उपर्युक्त परिभाषाओं पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि आंगल विद्वानों के अनुसार वर्तमान युग में आधुनिक कहानी साहित्य का शुद्ध एवं सुसज्जित रूप है। आधुनिक कहानीकार अपनी रचना में कल्पना के रंगों से थोड़े ही शब्दों में बहुत कुछ कह देता है। कहानी में कम से कम शब्दों, भावों घटनाओं तथा सहनायक के संक्षिप्त भावों की अभिव्यक्ति ही श्रेष्ठ कहानी की कसौटी हैं, आधुनिक कहानी के विषय में भारतीय विद्वानों के निम्न मत हैं। उन्हें भी जान लेना आवश्यक से।

जीयन के किसी एक अंग या मानव के एक भाग को प्रदर्शित करना ही कहानी है।

—प्रेमचन्द

आधुनिक कहानी सादे ढंग से केवल कुछ व्यंजक घटनाओं और थोड़ी वातचीत सामने लेकर क्षिप्रगति से किसी एक गम्भीर सवेदना या मनोभावों में पर्यवसित होने वाली गद्य है।

—रामचन्द्र शुक्ल

"आधुनिक कहानी कोई मार्मिक अनुभूति या तथ्य व्यञ्जित करने वाली होती है।"

—आचार्य विश्वनाथ प्रसाद

निष्कर्ष:—कहानी उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण करने पर निम्न तथ्य दिखाई पड़ते हैं :—

(१) आधुनिक कहानी की प्रमुख विशेषता यह हैं कि उसमें एक शब्द भी अनावश्यक, एक भी घटना अथवा पात्र व्यर्थ न हो।

(२) कल्पना आधुनिक कहानी का आधार है। इसके बिना कहानी निष्प्राण सी प्रतीत होती है।

(३) आधुनिक कहानी की श्रेष्टता विचारों, भावों शैली तथा शब्द चयन की कला पर निर्भर करती हैं। कहानी वही सफल मानी जाती है जो संक्षेप में लिखी होने पर पूरे आशय को प्रकट करती।

(४) यथार्थ चित्रण करना ही आधुनिक कहानी का उद्देश्य होना चाहिए।

विशेषताएं—राष्ट्र में नवीनता का जागरण हुआ। आधुनिक कहानी

भी समाज की नवीनता से अछूती न रह सकी। नवीन कहानी पर युग की विषम परिस्थतियों एवं जटिल आर्थिक समस्याओं का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन की चिन्गारियों की तपन नवीन कहानी में भरी हुई हैं। औद्योगिक क्रान्ति के कारण प्रत्येक मनुष्य धन को ओर दौड़ा जा रहा था। मनुष्य के अन्तंद्वन्द्व तथा भावनाएं पूंजीवाद एवं औद्योगिक क्रान्ति के पहिलों में दब कर रह गये थे। आर्थिक कठिनाइयों एवं राजनीतिक कुचक्रों के बीच फंसा मनुष्य अपने चारों ओर निराशा के घने बादल ही उमड़ते हुए देखता। साहित्यकार ने मौन भंग किया, उसका हृदय इस असहनीय पीडा से द्रवीभूत हो शब्दों के रूप में कलम के दो किनारों के बीच सरिता सा बहने लगा। काव्यकार ने सरस एवं आशाप्रद काव्य रचा तो लेखक ने मानव जीवन की अनेकानेक सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक कुण्ठाओं को कहीं सुबोध और सरल, तो कहीं व्रज से शब्दों को प्रयुक्त कर नवीन साहित्य की रचना की। और इस प्रकार तथ्यों के आघास पर सिद्ध किया जा सकता है कि जोवन की विषमताओं को कहानीकार ने अन्य साहित्यकारों की अपेक्षा अधिक चित्रित किया है। समाज की दयनीय दशा, अनेक आरोह-अवरोह को नवीन कहानी में कहानोकार ने अपनाकर साहित्य समाज का दर्पण है अक्षरशः सिद्ध कर दिया। युग की माग को समझ कर ही कहानीकार ने नवीन कहानी की रचना की नवीन कहानी में मुख्यतः निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य है :—

(१) उचित एवं सार्थक शब्दों का प्रयोग।

(२) घटनाओं तथा प्रसंगों को चुनने में योग्यता।

(३) यथार्थ तथा आदर्शवाद का समन्व्य।

(४) कल्पना का अधिकाधिक प्रयोग।

उचित एवं सार्थक शब्दों का प्रयोग :—आज का कहानीकार सदैव यही चेष्टा करता है कि वह थोड़े शब्दों को ही प्रयुक्त करके अपने भावों को चित्रित कर दे। शब्द चयन करते समय वप उन्हीं शब्दों का अपनाता है जो सरल, सुबोध एवं अर्थ पूर्ण हो। एक कहानीकार की सफलता पूर्ण रूप से इस बात पर ही निर्भर करती है कि वह किसी प्रकार से कम एवं उचित शब्दों को प्रयोग कर भावाभिव्यक्ति में पूर्णता ला सकता है।

घटनाओं तथा प्रसंगों के चयन में कुशलता: कहानीकार को सदैव विस्तार भय बना रहता है यही कारण है कि वह कहानी में उन्हीं घटनाओं एवं प्रसंगों को स्थान देता है जो नितान्त आयश्यक है। पात्रों का चयन करते समम भी उसका यही दृष्टिकोण बना रहता है।

यथार्थ तथा आदर्शवाद का समन्वय:--महान लेखक मुंशी प्रेमचन्द ने सदैव ही इस बात पर जोर दिया है कि समाज अथवा व्यक्ति का नग्न चित्रण करते समय इस बात का सदैव ध्यान रक्खे कि कहीं ऐसा न हो मानव स्वभाव से त्रुटि पूर्ण होने के कारण अपनी ही कमजोरियों को कहानी में देख कर ऊब न जाए। इसके लिए नितान्त आवश्यक था कि नवीन कहानीकार यथार्थ पर आदर्शवाद का आवरण चढ़ा कर उसे सरस बना दे। जैसा कि प्राय: आज कहानियों में आदर्शवाद एवं यथार्थवाद का गठबन्धन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कल्पना का अधिकाधिक प्रयोग—कहानीकार के पास जादूगर के डण्डे की तरह कल्पना रूपी छड़ी है जिससे कहानी सरस बनाने के साथ पाठक को मन्त्रमुग्ध कर लेता है। कल्पना की तूलिका से वह अपने मस्तिष्क पटल कर कहानी रच कर पाठकों को अधिकाधिक रसास्वादन कराता है। कल्पना नवीन कहानीकार का प्रमुख अंग है। इसके विलग करने पर नवीन कहानी निष्प्राण होती है।

प्रश्न ७--आधुनिक कहानी कितने भागों में बांटी जा सकती है

कहानी एक ऐसा सागर है जिसमें मिली हुई नन्हीं-नन्ही जल की बूंदों को अलग नहीं किया जा सकता है। भाव स्वयं में पूर्ण है इसे खण्डित नहीं किया जा सकता है और क्योंकि कहानी भी हृदय के भाव का ही ताना बाना है अतएव इसको भी टुकड़ों में विभाजित नहीं किया जा सकता है। शरीर और आत्मा नाम की वस्तु एक ही होती है फिर भी शरीर के बारे में जानने के लिए उसे हाथ, पैर, नाक, कान तथा मुंह आदि अंगों में विभाजित कर देते हैं। इसी प्रकार कहानी की गहराई में पहुंचने के लिए सरल मार्ग यही प्रतीत होता है कि उसके स्थूल शरीर को कुछ भागों में विभाजित कर लिया जाये

[सु]विधा के लिए नवीन कहानी का वर्गीकरण शिल्प विधान, भाषा, एवं शैली [त]था पात्र आदि कहानी के मुख्य गुणों के आधार पर ही उचित प्रतीत होता [है]। इस प्रकार कहानी को शैली की दृष्टि से निम्न भागों में विभाजित कर [स]कते हैं :–

चरित्र प्रधान कहानियां—इस प्रकार की कहानियों में मुख्य पात्र [अ]थवा अन्य किसी पात्र का चरित्र अनुकरणीय रूप में प्रस्तुत किया जाता है। [घ]टनाओं तक प्रसंगों पर ध्यान न देकर कहानीकार पात्र के चरित्र का यथार्थ [चि]त्रण कर उस पर आदर्शवाद का सुन्दर आवरण डाल देता है। उसने [']कहा था' कहानी इसी श्रेणी की कहानी है इस में इसके मुख्य पात्र लहनासिह [का] चरित्र पाठकों की दृष्टि में अनुकरणीय वन जाता है।

वातावरण प्रधान कहानियां :–प्रसाद जी ने इसी प्रकार की कहानियां लिखी हैं उनकी प्रसिद्ध कहानी 'मधुआ' इसी प्रकार की कहानी है। इस श्रेणी की कहानियों में कहानीकार प्रसग तथा घटनाओं आदि के वर्णन के अतिरिक्त सवसे अधिक वातावरण पर ध्यान देना ही अपना कर्त्तव्य समझता है। वातावरण में वह अपनी प्रतिभा के वल पर भावों एवं अनुभूति की आधारशिला पर सुन्दर एवं सुदृढ़ कहानी रूपी भवन का निर्माण करता है।

कार्य प्रधान कहानियां—इस प्रकार की कहानियों में जासूसी प्रधान कहानियां आती हैं। इस प्रकार के लेखक अनेकानेक गुप्त घटनाओं एवं रहस्यों का उद्घाटन करते हुए प्रतीत होते हैं। इन कहानियों का विषय चोरियों, अग्निकाण्डों एवं हत्यारों आदि की छानवीन होती है। 'भूतनाथ' चन्द्रकान्ता' सन्तति आदि इसी प्रकार की कहानियां हैं। वर्तमान युग में भी अनेक पत्रिकायें मुख्यत: मनोहर कहानियां ऐसी ही कहानियों को प्रकाशित करती है।

कथानक प्रधान कहानियां—इस प्रकार की कहानियों को पढ़ते-पढ़ते पाठक अपने आपको खो सा देता है। घटनाओं का क्रम इस प्रकार से होता है कि वे माला के मोतियों सी सूत्रों में बन्ध कर पाठक को वरवस अपनी ओर खींच सा-लेती है। कहानी के अन्य अंगों की अपेक्षा इस प्रकार की कहानी में कथा को संगठित करने में कहानीकार विशेष ध्यान रखना अपना प्रमुख

उद्देश्य समझता है।

विविध कहानियां :--उपर्युक्त चार वर्गों के अतिरिक्त जो अन्य कहानियां होती हैं वे इस श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं। इस श्रेणी में हास्य प्रधान कहानियां, प्रभाववादी, प्राकृतवादी, एवं ऐतिहासिक एव धार्मिक कहानियों को रखा जाता है।

वैसे सिद्धान्त की दृष्टि से कहानी दो ही प्रकार की होती हैं। (१) आदर्शवादी कहानियां। (२) यथार्थवादी कहानियां। परन्तु नवीन कहानी एक पक्षीय न होकर 'यथार्थोन्मुख आदर्शवादी' होती हैं।

प्रश्न ८--कहानी के शीर्षक की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

संसार में प्रत्येक वस्तु पर एक विशेष प्रकार का लेवल लगा होता है यह लेवल ही इस बात का ज्ञान कराता है वह वस्तु कैसी और किस कोटि की है। इसी प्रकार कहानीकार भी अपनी कहानी का नामकरण किया करते है। यह नाम ही उस कहानी का मुख्य द्वार होता है। यदि कहानी का शीर्षक ही सुन्दर अथवा रूचिक नहीं होगा तो पाठक कहानी पढ़ने से पहले ही उस कहानी के प्रति अपना निराशावादी दृष्टिकोण बना लेता है। यह शीर्षक ही होता है जो पाठक का हृदय कम्पित कर देता है तो कभी हास्य व्यंग की हिलोरे उठाता है। कहानी का शीर्षक यदि उपयुक्त नही तो कहानीकार का सारा परिश्रम धूल में मिल जाता है।

कहानीकार यदि अपनी कहानी की सफलता चाहता है तो आवश्यक है कि कहानी के शीर्षक रूपी मुकुट को चयन करने में विशेष ध्यान दें। शीर्षक की सुन्दरता इस बात पर निर्भर करती है कि शीर्षक संक्षिप्त हो। शीर्षक को पढ़ते ही पाठक का मन बरबस कहानी पढ़ने को उत्सुक हो जाये यह अनिवार्य है। शीर्षक ऐसा होना चाहिये जो पाठक के हृदय में उत्सुकता उत्पन्न कर सके। शीर्षक रहस्य पूर्ण होने से पाठक की लालसा बढ़ जाती है। अतएव कहानी की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि पाठक कहानी का शीर्षक मात्र पढ़ कर ही कहानी आदि से अन्त तक पढ़ने के पश्चात् ही छोड़े। प्रायः शीर्षक ऐसा होना चाहिये कि उसको पढ़ते ही कहानी के बारे

में अपने विचार बना ले। कहानी का विषय कैसा है इस बात को भी कहानी का शीर्षक स्वयं ही प्रगट कर देता है। कुछ कहानीकार अपनी कहानी का शीर्षक उसके मुख्य पात्र के नाम पर अथवा घटना विशेष पर रखते हैं। अन्य लेखक उसके भाव अथवा परिणाम को लेकर शीर्षक चुनते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि संक्षेपण, रहस्य, उत्सुकता एवं सरल शीर्षक ही उपयुक्त एवं सुन्दर माना जाता है।

प्रश्न ६ —कहानी के आलोचनात्मक तत्वों को संक्षेप में बताइये।

उत्तर —कहानी के अन्तर्गत कहानीकार निजी या अन्य किसी की भावाभिव्यक्ति करता है। भिन्न-भिन्न मनुष्यों की प्रकृति-भिन्न होती। अतएव जो भाव एक व्यक्ति का होता है आवश्यक नहीं कि सभी व्यक्ति उससे सहमत हों। कौनसी कहानी कितनी श्रेष्ठ है। इसकी नाप तोल करना कठिन है। परन्तु प्रत्येक कहानी में कुछ न कुछ विशेषताएं अवश्य होती हैं। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर कहानी का श्रेष्ठ माना जाता है। कहानी के मूल तत्वों के आधार पर श्रेष्ठ कहानी में निम्न लिखित गुण होने आवश्यक हैं।

१. शीर्षक रहस्य पूर्ण, संक्षिप्त एवं उत्सुकता जगाने वाला होना चाहिए। पाठक को उसका रहस्य कहानी के अन्त में ही पता चले आरम्भ में नहीं।

२. कथानक संक्षिप्त होने के साथ ही साथ रुचिकर एव सरल होना चाहिये।

३. पात्रों का चयन वातावरणानुकूल होना अनिवार्य है। वे सामाजिक प्राणी जैसे हों न कि कल्पना लोक के देवता अथवा अदृश्य व्यक्ति। चरित्र-चित्रण की स्वाभाविकता निरन्तर बनी रहनी चाहिये।

४. संवाद संक्षिप्त एवं सरल होने चाहिये। अनावश्यक शब्दों अथवा वाक्यों का प्रयोग नहीं होना चाहिये।

५. कहानी का मुख्य उद्देश्य पाठक का मनोरंजन करने का साधन हैं। अतएव कहानी की भाषा सरल रोचक तथा पात्रानुकूल होनी चाहिये। मुहावरों तथा उक्तियों आदि के प्रयोग से कहानी में संजीवता आ जाती हैं। भाषा ऐसी अपनानी चाहिये कि आदि से अन्त तक प्रवाह बना रहे।

६–कल्पना की पुट से कहानी सुन्दर एवं रुचिकर रूप धारण कर लेती है।

७–कहानी का आरम्भ ढंग से होना चाहिये जिससे कि पाठक अधिक रुचि ले सके।

८–कहानीकार कहानी लेखन में इस बात पर ध्यान रक्खे कि कहानी का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिये। पाठक स्वयं ही कहानी का उद्देश्य जान जाये अत्यन्त आवश्यक है।

६–सामग्री का चयन जीवन के किसी भी पहलू को लेकर किया जाना चाहिए।

१०–कहानी का अन्त प्रभावोत्पादक होना चाहिये।

११–कहानी में घटनाओं तथा प्रसंगों को कम से कम स्थान मिलना चाहिए

१२–मुख्य पात्र का चरित्र अनुकरणी होना चाहिए।

उपर्युक्त तत्त्वों के आधार पर सिद्ध की जा सकती है कि कौनसी कहानी कितनी श्रेष्ठ है।

"उसने कहा था"

(लेखक – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी)

प्रश्न १०–गुलेरी जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए "उसने कहा था" कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर–कहानी जगत के ध्रुव नक्षत्र श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी का जन्म सन् १८८३ ई० जयपुर में हुआ था। आरम्भ से ही गुलेरी जी श्रेष्ठ विद्यार्थी रहे हैं प्रथम श्रेणी सर्व प्रथम प्राप्त कर गुलेरी जी ने प्रयाग विश्व-विद्यालय से १६ वर्ष की अल्पायु में इन्ट्रेंस की परीक्षा पास की। सन् १९०४ ई० से इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय की बी०ए०पास की परीक्षा प्रथम श्रेणी में सर्व प्रथम रह कर उत्तीर्ण की तत्पश्चात आप मेयो कालेज अजमेर में प्रधान अध्यापक के पद पर नियुक्त हो गये। सन् १९२० ई० में ये हिन्दू युनिवर्सिटी में 'कालेज आरियण्टल लर्निङ्ग एण्ड थियोलोजी' के प्रिन्सिपल नियुक्त हुए। दुर्भाग्यवश दो वर्ष पश्चात् ही गुलेरी जी की असामयिक मृत्यु हो गई।

कहानीकार और लेखक के साथ ही साथ गुलेरी जी भाषा विज्ञान, संस्कृत एवं पुरातत्व के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। यद्यपि आपका कार्य क्षेत्र सीमित ही रहा तो भी आप अपनी तीन कृतियों 'सुखमय जीवन' 'बुद्धू का कांटा' तथा 'उसने कहा था' को रचकर ही साहित्य जगत में अपनी एक अमिट छाप छोड़ गए हैं। प्रस्तुत सग्रह में उनकी कहानी "उसने कहा था" हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। भारत में हीं नही अपितु विश्व की श्रेष्ठ कहानियों में उक्त कहानी को स्थान दिया है। व्यञ्जना जो आधुनिक आख्यायिका का प्रधान लक्षण माना जाता है। इस कहानी का प्रधान गुण है।

सारांश--अमृतसर में सुबह से शाम तक तंग गलियों में तांगों वालों के स्वर सुनाई पड़ते हैं उनके शब्द कर्णं प्रिय एवं मधुर होते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और'साहब' सुने विना किसी को हटना पड़े। यह नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं, चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। 'अच्छा' शब्द तो वहां हर कोई भीड़ मे कहता दिखाई पड़ता है। बम्बूकार्ट वाले बाजार में एक लड़का और एक लड़की एक दुकान पर आकर मिलते है। वे अपनी अपनी ननीहाल में आए हुए हैं। दूर चलकर लड़के ने पूछा-"तेरी कुड़माई (मंगनी) हो गई?" लड़की आंखें चढ़ाकर "धत्" कह कर दौड़ जाती है।

दूसरे तीसरे दिन सब्जी वाले के यहां, दूध वाले के यहा अकस्मात दोनों मिल जाते हैं। महीने भर तक यही क्रम चलता रहा। कई बार लड़के ने पूछा "तेरी कुड़माई हो गई?"और उत्तर में लड़की एक ही शब्द में उत्तर दे देती। हमेशा ही वह ,धत्' कह कर दौड़ जाती, परन्तु जब एक दिन लडके ने हंसी में फिर पूछा 'तेरी कुड़माई हो गई' तो लड़की उसकी सम्भावना के विरुद्ध बोली- 'हां हो गई।'

"कब?"

"कल' देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ 'सालू' (ओढ़नी)। लड़ाई में लड़का जिसका नाम लहनासिंह था फौज में भरती हो गया। पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह न०७७ राइफल में जमादार हो गया। लड़की का विवाह हजारासिंह सूबेदार से हो जाता है युद्ध स्थल में जाने की तैयारी की जा रही

थी। सूबेदार लहनासिंह से कहता है कि 'लहना' सूबेदारनी तुमको जानती है, बुलाती है। जा मिल आ।' वह मिलने जाता है। वहा सूनेदारनी से वार्तालाप करते समय उसके मस्तिष्क में हलट कर अमृतसर वाली लड़की का चित्र उतर आता है। वह उसको उसके पति तथा पुत्र की रक्षा का वचन देता है।

सर्दी की ऋतु है, फ्रांस और बेल्जियम सीमा पर भारतीय फौज के सिख जवान सीमा को रक्षा कर रहे हैं सीमा से लगभग एक मील की दूरी पर एक खाई में पचास के लगभग जर्मन सिपाही छिपे बैठे हैं। सिक्ख जवानों की टुकडी का एक सिपाही बोधासिह बोमार पड़ा है लहनासिह की टुकडी का लपटन या तो मार दिया जाता है या कैद कर लिया जाता है। एक जर्मन उनकी वर्दी पहन कर वहां जाता है। वह लहनासिह को जर्मन टुकड़ी पर धावा बोलने की आज्ञा देता है। अपनी टुकड़ी को सब कुछ समझा बुझा कर सुवेदार चल देता है। नकली लपटन लहनासिंह को सिगरेट पेश करता है। वह लपटन की चालाकी समझ जाता है। वह सुवेदार को लौटने के लिये कुछ सिपाही भेजता है और बन्दूक उठाकर साहब की कुहनी पर दे मारता है। वे चित हो जाते है। उसने साहब को सिगड़ी के पास लेटाया, जेबों की तलाशी ली। लहना ने पतलून की जेबों की तलाशी नहीं ली। तभी साहब की जेब से पिस्तौल चला और लहनासिह की जांघ में लगा। इधर लहना की हैनरी मार्टिन के दो फायरों ने साहब की कपाल किया कर दी।

दोनों ओर से अंगारे बरस रहे थे। सूबेदार के दाहिने कन्धे में से गोली आर पार हो निकल गई। लहनासिह की पसली में एक गोली लगी। वह मूर्छित हो जाता है। मूर्छावस्था में ही वह अपनी कहानी वजीरसिह को सुनाता है। वह कहता है 'वजीरासिह पानी पिला'...—"उसने कहा था' कुछ दिनों पीछे लोगों ने अखबार मे पढ़ा— फ्रांस और बेलजियम ८६ वी सूची मैदान में घावों से भरा—न० ७७सिख राइफल्स जमादार लहनासिह।

प्रश्न—"उसने कहा था"कहानी की आलोचना कीजिए।

अथवा

'उसने कहा था' कहानी को ध्यान में रखते हुए इसके लेखक की कहानी कला के विषय में बताइये।

अपनी पाठ्य पुस्तक में तुम्हें सब से अच्छी कहानी कौनसी लगी। तर्क से उसकी श्रेष्ठता सिद्ध कीजिए।

अथवा

शैली तथा चरित्र चित्रण के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की आलोचना कीजिये।

उत्तर—कहानी की दृष्टि में—गुलेरी जी उन महान विभूतियों में से हैं जो करते तो थोड़ा है परन्तु जो करते हैं वह सदैव ही सारे विश्व में अमर पद प्राप्त कर लेता है वैसे गु .री जी ने 'उसने कहा था' के अतिरिक्त अन्य दो कहानियां और लिखी हैं। परन्तु प्रस्तुन कहानो उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र लहनासिह का चरित्र अनुकरणीय है अतएव यह चरित्र प्रधान कहानी है। कहानी में नवीन कथानक तथा भावों की अभिव्यंजना की गई है। भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की कहानियों में प्रस्तुत कहानी अपनी निजी विशेषताओं के कारण एक श्रेष्ठ कहानी मानी जाती हैं। इस अकेली कृति ने गुलेरी जी को अमरता प्रदान की है यथार्थवादी दृष्टिकोण से यह कहानी सर्वोत्तम है। शुक्ल जी के निम्न विचार कहानी की विशेषता प्रकट करते हैं:—

'स्वर्गीय गुलेरी जी की प्रसिद्ध कहानी "उसने कहा था" सादे ढंग से केवल कुछ अत्यन्त व्यंजक घटनाएं और थोड़ी बातचीत सामने लाकर क्षिप्र गति से किसी एक गम्भीर मनोभाव में पर्यवसित होने वाली कहानी का बहुत अच्छा नमूना है।"

शीर्षक—"उसने कहा था" कहानी का शीर्षक है। यह अपने में एक अनोखा रहस्य छिपाये हुए है। किसी श्रेष्ठ कहानी का शीर्षक सदैव ही कौतूहल तथा उत्सुकता की वृद्धि किया करता है। प्रस्तुत कहानी के शीर्षक में यह गुण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। शीर्षक के पढ़ने मात्र से ही पाठक सोचने लगता है कि किसको कहा था ? किसने कहा था क्या कहा था। शीर्षक के चारों ओर कहानी दौड़ती हुई चरम सीमा पर पहुंचती है। कहानी के अन्त तक शीर्षक

ध्वनित होता रहा है। पाठक जिज्ञासा सम्पूर्ण कहानी के पढ़ने के पश्चात् ही होती है। अतएव कहानी का शीर्षक संक्षिप्त होते हुए कहानी के पूरे भाव को छिपाए हुए हैं।

कथानक—कथारक की दृष्टि से उसने कहा था कहानी में दोष सा आ जाता है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी में अनेक प्रसगों तथा घटनाओं का वर्णन करके पाठक को सोचने के लिये विवश कर दिया है। और फिर घटनाओं के समय मे कोई मेल नहीं क्रम की दृष्टि से उन्हें उचित स्थान नहीं मिला है। लेखक कहानी का आरम्भ अमृतसर के एक बाजार से होता है। परन्तु इसके बाद वह अनेक घटनाओं को बान्धने के प्रयास में लग जाता है जिससे कथानक उलझ सा जाता है। कहानी जबकि जीवन के किसी एक अंग पर आधारित होनी चाहिये इस बात पर लेखक जम नहीं सके। लहनासिंह की लड़की से मुलाकात होंने से उसके अन्तिम श्वांस तक के जीवन का वर्णन करते हैं। इसके लिए वे अनेक प्रसंगों तथा घटनों का चयन करते हैं ताकि कहानी विकास की ओर बढ़ती हुई चरम लक्ष्य तक पहुच सके। और क्योंकि "उसने कहा थ।" एक चरित्र प्रधान कहानी है अतएव इसके मुख्य पात्र का चरित्र अनुकरणीय होना चाहिए। यही विशेष कारण है कि वह लहनासिंह के यथार्थ जीवन की झांकी प्रस्तुत करने के वाद से पाठकों के सम्मुख एक आदर्श पात्र के रूप में लाकर खड़ा कर देता है। और इसके लिए लेखक को अनेक प्रसंगों तथा घट-नाओं से कथानक का ताना वाना बुरा है ताकि वह लहनासिंह को एक श्रेष्ठ-तम पात्र के रूप में पाठकों के सामने ला सके। घटनाओं की अधिकता होने पर भी कहानी में जरा सी भी शिथिलता नहीं आने पाई है। कथानक दीर्घ होते हुए भी सुगठित एव रोचक है।

पात्रों का चयन—जिस कहानी में सीमित पात्र हों उस कहानी को श्रेष्ठ कहानी कहा जा सकता है 'उसने कहा था' कहानी में पात्रों की अधिकता है। इसका कारण लेखक द्वारा अनेक घटनाओं तथा प्रसंगों का वर्णन मात्र है। इतना होने पर भी सभी पात्रों का वहुत स्वाभाविक तथा प्रवृत्तियों के अनुकूल चित्रण हुआ है। मुख्य पात्र लहनासिंह का चरित्र इतनी कुशलता से

प्रस्तुत किया गया है कि वह पाठकों की दृष्टि में एक आदर्श पुरुष बन जाता है।

संवाद - संवाद कहानी के प्राण होते हैं। इसके आधार पर ही कहानी रोचक तथा सजीव होती हुई विकास करती है। लम्बे-लम्बे संवाद को पढ़ते-पढ़ते पाठक ऊब सा जाता है। परन्तु 'उसने कहा था' कहानी के संवाद संक्षिप्त एवं रोचक है। नपे तुले शब्दों में गुलेरी जी घटना अथवा प्रसंग का सजीव चित्र सा खींच देते हैं। प्रस्तुत कहानी के संवाद अर्थ पूर्ण तथा स्वाभाविक है। वार्तालाप के समय के लड़के और लड़की का चित्र निम्न संवादों में दृष्टव्य है।

"तेरे घर कहां है ?"
"मगर में—और तेरे ?
माँझे में—यहां कहां रहती ?
× × ×
"तेरी कुड़माई हो गई ?"
"हां हो गई।"
कब ?"

'कल' देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ 'सालू' उपर्युक्त कथनों की सी चित्रात्मकता एवं सजीवता प्रत्येक कहानी में नहीं मिल पाती है।

उद्देश्य —अपनी प्रत्येक कहानी लिखते समय प्रत्येक कहानीकार किसी न किसी उद्देश्य को अवश्य स्पष्ट करना चाहता है। प्रस्तुत कहानी 'उसने कहा था' में गुलेरी की एक सच्चे प्रेम, आज्ञापालक, वफादार सिपाही, वचन का पक्का तथा बलिदान देने वाले के रूप में लहनासिंह को प्रस्तुत करने का उद्देश्य लिए हुए हैं। वे अपने इस प्रयास में पूर्णता सफल भी हुए हैं। कहानी में लेखक ने स्पष्ट किया है कि प्रेम और कर्त्तव्य एक दूसरे के पूरक हैं। अतएव उद्देश्य की दृष्टि से 'उसने कहा था' एक सफल कृति है।

भाषा—प्रस्तुत कहानी की भाषा प्रत्येक स्थल पर सरल एवं बोध गम्य रही है। इस कहानी की भाषा प्रभावोत्पादक तथा पात्रानुकूल है। प्रारम्भिक स्थलों को छोड़कर अन्य प्रत्येक स्थान पर वाक्य छोटे छोटे हैं। पात्रों के अनु-

सार ही कहानीकार ने भाषा कों अपनाया है। इक्का चलाने वाले सदैव व्यंग पूर्ण भाषा प्रयुक्त करते दिखाई देते हैं। जैसा कि उनका स्वभाव होता है। उदाहरण दृष्टव्य हैं–बचो खालसा जी ! हटो,हटों भाई जी। 'ठहरना भाई ! आने दो लाला जी ! 'हटो बाछां।' हट जा पुस्ता प्यारि, येवचजा लम्बी वालिये। मुहावरों यथा माथा ठनका, मीठी छुरी आदि का प्रयोग कर कहानी में रोचकता आ गई है।

चरित्र चित्रण--चरित्र प्रधान कहानी होने के कारण गुलेरी जी ने उसमें घटनाओं अथवा प्रसंगों की अपेक्षा कहानी के मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण करने में अधिक ध्यान दिया है। लेखक द्वारा वर्णित लड़के तथा लड़की की अमृतसर में बातचीत कराते समय वास्व मे आंखों के सम्मुख दो छोटे किशोर और किशोरी का चित्र सा खींच दिया है। वचन पालन के लिये लहना सिंह का आत्म बलिदान कर देना पाठकों के लिये एक आदर्श बन जाता है। अतएव संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'उसने कहा था' कहानी चरित्र चित्रण की दृष्टि से उत्तम ही नहीं सर्वोत्तम कही जा सकती है।

कहानी का आरम्भ—कहानी आरम्भ करने में कहानीकार ने सुन्दर दृश्य को चित्रित किया है। कहानी इस ढंग से शुरु की गई है कि पाठक के मन में आदि से अन्त तक उत्सुकता जगी रहती है।

कहानी अन्त--'उसने कहा था' कहानी का अन्त पाठकों के हृदय को छूता सा प्रतीत होता है। प्रत्येक पाठक लहनासिंह की दृढ़ता देखकर नतमस्तक हो जाता है। कहानी दुखान्त होने के कारण पाठक लहनासिंह के प्रति सहानुभूति प्रगट करते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर 'उसने कहा था' एक सर्वश्रेष्ठ कहानी कही जा सकती है शीर्षक, कथानक, पात्र, संवाद, उद्दश्य भाषा, आदि और अन्त सभी विशेषताओं से पूर्ण गुलेरी जी की यह कहानी संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियों की श्रेणी में आती है।

प्रश्न १२—'उसने कहा था' कहानी का नायक आप किसे मानते हैं। क्यों ? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिए।

अथवा

लहनासिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर —कहानी का केन्द्र विन्दु लहनासिंह है। कहानी की समस्त घटनायें तथा प्रसंग उसी से सम्बन्धित है। कहानी का सम्पूर्ण कथानक लहनासिंह के चारों ओर ही चक्कर लगाता रहता है कहानीकार ने अन्त भी लहनासिंह पर किया है इन कारणों से लहनासिंह ही 'उसने कहा कहा था' कहानी का नायक है। प्रस्तुत कहानी में लहनासिंह के दो रूप दिखाई देते हैं। प्रथम है एक भोला भाला युवक और सच्चा प्रेमी, दूसरा रूप उसकी दृढता का परिचायक है। इस रूप में वह है वीर सिपाही, प्रतिज्ञा पालक, अपने अफसर का आज्ञाकारी। दोनों ही रूपों में लहनासिंह पाठकों का दिल जीत लेता है। उसके चरित्र की विशेषतायें पाठकों को अनजाने में ही अपनी ओर खींच लेती हैं।

कहानी के पूर्वार्द्ध में जैसा कि कहानीकार ने प्रस्तुत किया है लहनासिंह एक भोला भाला बालक दिखाया गया है। अन्य युवकों की भांति वह भी एक लड़की से प्रेम करने लगता है दोनों बाजार में वार्तालाप करते हैं समय के साथ दोनों का प्रेम बढ़ता गया। लड़की जब लहना को यह बताती है कि उसकी कुड़माई हो गई है तो लहनासिंह का दिल टूट जाता है। उसके पैर आगे बढ़ने में संकोच सा करते हैं। रास्ते में वह कई व्यक्तियों से टकरा भी जाता है। यहाँ तक कि कहानी में लहनासिंह के प्रेम में जरा सी भी अशिष्टता दृष्टिगोचर नहीं होती। सच्चा प्रेम वही होता है जहां प्रेमी और प्रेमिका परस्पर एक दूसरे के दुःख-सुख में सहयोग दें। युद्ध की तैयारी करने के बाद सूबेदार के कहने पर जब वह सूबेदारनी से मिलने को जाता है तो देखता है कि अमृतसर के बाजार में मिली लड़की ही उसकी सूबेदारनी है प्रेम एक हृदय का भाव है। यह लहनासिंह के हृदय में तब उठता अवश्य है परन्तु रूप परिवर्तन कर। अब लहनासिंह के लिए वह लडकी उसकी बाल्यकाल की प्रेमिका न होकर उसकी सूबेदारनी थी और उसे अपनी सूबेदारनी की आज्ञा का पालन करना ही अपना धर्म रह गया था। उसका यह धर्म बन भी क्यों न जाता क्योंकि उसने उस मिट्टी से जन्म लिया था जहाँ पर प्रेम की परिभाषा

शरीर का स्पर्श मात्र न हो कर हृदय से हृदय का मिलन बताई जाती है।

कहानी का उत्तरार्द्ध उपर्युक्त घटना के ठीक पचचीस वर्ष बाद होता है। अब कल का वह लड़का जो एक दिन अमृतसर में एक लड़की से बात-चीत में ही दिल दे बैठा था आज एक वफादार, वीर और उत्साही सैनिक के रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत होता है। वह अब सीख चुका था कि प्रेम का अर्थ है बलिदान। चलते समय वह सूवेदारनी को उसके पति तथा पुत्र की रक्षा का वचन देकर आता है। इसीलिये वह रात भर वह दोनों कम्बल बोधासिंह को उढ़ाता है। उसके स्थान पर स्वयं पहरा देता है। उसको लकड़ी के सूखे तख्तों पर सुलाता हैं और स्वयं कीचड़ में पड़ जाता है।

लहनासिंह एक पक्का लडाकू है। वह रात दिन अपने कर्त्तव्य के लिए लडने को तैयार है। एक स्थान पर वह कहता है—हड्डियों-हड्डियों में जाडा धंस गया है। सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ से चम्वल की वावलियों के से सोते झर रहे हैं। एक दाव हो जाए तो गर्मी आ जाये।" वीर होने के साथ साथ वह एक बुद्धिमान सैनिक भी है। बुद्धि के वल पर ही वह नकली लपटन को पहचान लेता है और इस प्रकार अपने सूवेदार को संकट से वचा लेता है।

वह यद्यपि वहुत अधिक घायल हो गया है तो भी अस्पताल से आई गाडी में वह पहले सूवेदार तथा बोधासिंह को जाने के लिये कहता है। मना करने पर वह उन्हें कसम दे देता है इस प्रकार मृत्यु के निकट होते हुये भी अपने सूवेदार तथा वोधा को भेज कर लहनासिंह असीम स्वामी भक्त का परिचय देता है। गाड़ियां चल पड़ी थी वह तव कहता है—"सुनिए तो, सुवेदारनी हीरा को चिट्ठी लिखी तो मेरा माथा टेकना लिख देना और जव घर जाओ तो कह देना कि मुझ से जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया। उसके ये शब्द जव पाठकों की आँखों के सम्मुख आते हैं तो उनकी आंखों में आंसू तैरने लगते हैं। कितना महान त्याग और कर्त्तव्य पालन लहनासिंह ने किया है। निसन्देह यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अपने इस त्याग के लिये वह पूरे विश्व के युवकों के लिए एक आदर्श रूप है। वह एक सच्चा प्रेमी है इस वात से स्पष्ट हो जाता है कि उसके अन्तिम श्वांस में से अन्तिम शब्द निकलते

हैं "उसने कहा था।" अतएव कहा जा सकता है कि लहनासिंह एक सच्चा प्रेमी आत्मत्यागी वीर एवं कुशल सिपाही तथा स्वामी भक्त एवं वफादार आदि गुणों से पूरित होने के कारण एक अनुकरणीं एवं आदर्श पात्र है।

बूढी काकी

(लेखक -- मुन्शी प्रेमचन्द)

प्रश्न १३—प्रेमचन्द जी का परिचय देते हुए 'बूढ़ी काकी' कहानी का सारांश लिखिए।

प्रेमचन्द जी का जन्म संवत् १९३७ में बनारस जिले के अन्तर्गत हुआ था इनके वचपन का नाम धनपतराय था। हाई स्कूल परीक्षा पास करन के पश्चात् प्रेमचन्द ८१) रु० मासिक की नौकरी पर अध्यापन का कार्य करने लगे। नौकरी करते हुए आपने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद आप स्कूल के सब–डिप्टी इन्सपैक्टर हो गये। शुरू-शुरू में ये उर्दू में साहित्य साधन किया करते। परन्तु अचानक मातृ-भाषा की ओर ये आकृष्ट हो गये। सन् १९१६ ई० में इनका सवसे पहली हिन्दी कहानी का प्रकाशन सरस्वती पत्रिका में हुआ।

कमल के सिपाही प्रेमचन्द जी को उपन्यास सम्राट कहा जाता है। वे इसके लिये तो सुयोग्य हैं ही साथ ही साथ यदि उन्हें कहानी सम्राट भी कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रेमचन्द जी ने अपनी कहानी के लिये उन पात्रों को चुना जो दीन थे, निसहाय और अनजाने थे। उनकी कहानियों में कहीं 'होरी' सरीखा भोला भाला किसान है तो कहीं है भिखारिणी और मजदूरनी का सजीव वर्णन।

कविवर पन्त की पंक्ति 'भारत माता ग्राम-वासिनी' उन पर ठीक वैठता है। वे गांधी जी के मत को लेकर ही चले थे। वह मत था कि भारत गांवों में वसता है। इस उक्ति का सार प्रेमचन्द जी ने अच्छी तरह समझा और इसी को मुख्यतः अपनी कहानी में स्थान दिया है। प्रेमचन्द अपने साथ हिन्दी जगत् में एक नवींन विचार धारा लेकर अवतरित हुए। कहानी के तो उन्होंने रूप को ही परिवर्तित कर दिया। रूढ़ि तथा अन्त सामाजिक आडम्बरों एवं अन्याय का दमन अपनी कहानियों द्वारा प्रदर्शित कर आने वाले

कहानीकारों के लिये एक प्रकाश किरण पुंज सिद्ध हुए। सरल एवं ग्रामीण भाषा का उन्होंने सर्वत्र प्रयोग किया है। अपने समय की राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर एक महानतम कार्य किया है।

अपनी प्रत्येक कहानी में प्रेमचन्द जी ने यथार्थवाद तथा आदर्शवाद का समन्वय करने का सुन्दर प्रयास किया है उन्होंने अपने तीस वर्षों के रचना काल में लगभग ३०० सुन्दर एवं उपयोगी कहानियों की रचना की है। सभी कहानियों में प्रायः कोई न कोई सुझाव, जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण अथवा समस्या का हल अवश्य दिया हुआ होता है। उनकी अधिकतर कहानियों का प्रकाशन केन्द्र 'मानसरोवर' रहा है।

सारांश—प्रेमचन्द जी बूढ़ी काकी कहानी में एक विधवा का सजीव चित्र खींचा है। काकी बेचारी अब बूढ़ी हो चुकी है। वह निसहाय है। अन्तद्वन्द्वों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है।

बूढ़ी काकी के पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कई वर्ष बीत गये हैं। सभी बेटे एक एक करके युवावस्था में ही काल का ग्रास बन गये। उनका इस दुनियां में कहने मात्र को एक भतीजा था। उसी के नाम उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति लिख दी। आरम्भ में तो भतीजे ने लम्बे लम्बे वायदे किये परन्तु धीरे धीरे वह चाची को भूल सा गया। उसकी सम्पत्ति की आय दो सौ रुपये से कम न थी, तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन नहीं मिल पाता था।

एक दिन बुद्धिराम के लड़के सुखराम का तिलक आया भट्टियों पर कड़ाहे चढ़ रहे थे। चारों ओर घी की खुशबू फैली हुई थी। मेहमानों का तांता लगा हुआ था। पर मन मारे बेचारी बूढी काकी अपनी कोठरी में विचारक की भांति बैठी हुई थी। वह काफी देर तक सोचती रही। घी और मशालों की सुगन्धित से उसका मन ललचा रहा था। मुंह में पानी भर आता था। मस्तिष्क पटल हर लाल लाल, फूली फूली नरम नरम पूड़ियों का चित्र उतर गया था। वह कठिनाई से चौख से उतरी और धीरे धीरे रेंगती हुई कड़ाही के पास आ बैठी।

रूपा कार्य की अधिकता के कारण कुछ परेशान सी हो रही थी। क्योंकि करने वाली अकेली ही थी जैसे ही उसने काकी को देखा क्रोध में भर गई वह काकी पर लोक लिहाज छोड़ वाज की तरह झपटी। काकी पर वह कटु एवं अशिष्ट शब्दों की बारिश कर देती है। गुस्से में आ कर वह बोली "तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुंह में पानी न जाये परन्तु तुम्हारी पूजा पहले हो जाये। ये कठोर शब्द सीधे काकी के हृदय पर चोट करते हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी वह वेचारी चुप ही रही। और फिर अपनी चिरपरिचत एकाकी कोठरी में बैठ कर खोने लगी विचारों में।

भोजन तैयार हो गया, पत्तलें विछा दी गई। भोजन शुरू हुआ। काकी ने मन में सोचा मुझे भी कोई न कोई बुलाने अवश्य आएगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। खाना अभी तक चल ही रहा था। वेचारी काकी सोचती है कि भोजन समाप्त हो गया। इसी बीच फिर से काकी रेंगती हुई वहां आ पहुंचती है। पं० बुद्धिराम की कुपित दृष्टि उन पर पड़ती है। वे आग ववूला हो उठते हैं। उसने काको के दोनों हाथ पकड़े और उसे घसीट कर फिर से कोठरी में डाल दिया।

अकेली लाडली (बुद्धिराम की लड़की) कुढ रही। उसे काकी से अत्यधिक स्नेह था काकी भी उसका बड़ा लाड प्यार करती थी। वह काकी के पास जाना चाहती पर मां के भय से रुक जाती। आधी रात बीतने को थी सब सो गये थे। वह धीरे से उठी, पिटारी उठाई और काकी की ओर चल दी। काकी पूड़ियों पर टूट पडी। पांच मिनट में पिटारी खाली हो गई। पिटारी की खुर्चन तक वह चाट गई जब भी काकी की तृष्णा समाप्त नहीं हुई तो वह मेहमानों की झूठी पतलों से बचा भोजन चुन-चुन कर खाने लगी। ठीक उसी समय रूपा की आंखे खुली। इस दृश्य को देख कर उसका हृदय रुक सा गया। करुणा और भय से उसकी आंखें भर आई। उसने अपने मन में स्वयं को धिक्कारा। भण्डार खोल कर वह एक थाल सभी वस्तुएं सजाकर काकी के पास ले गई। रूपा काकी को भोजन करने को कहती है। वह अपनी त्रुटि के लिये क्षमा मांगती है। भोले-भाले बच्चों की तरह काकी सब कुछ भुला देती है। वह भोजन करने लगती है और रूपा को हृदय की

शुभ भावनाएं देती है। इस दृश्य को देखकर रूपा अत्यधिक आनन्द मग्न होती है।

प्रश्न १४—शैली की दृष्टि से 'बूढ़ी काकी' कहानी की आलोचना कीजिये।

अथवा

"बूढ़ी काकी" कहानी की आलोचना करते हुए प्रेमचन्द जी की कहानी पर प्रकाश डालिए।

अथवा

बूढ़ी काकी" कहानी की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी एक वृद्धा के जीवन के अन्तंद्वन्द्वों के प्रसंगों पर आधारित होने के कारण मनोवैज्ञानिक कहानियों की श्रेणी में आती है। एक सफल कहानी की सभी विशेषताएं प्रेमचन्द जी की प्रस्तुत कहानी में सरलता से देखी जा सकती है। निम्न तर्कों के आधार पर इसकी श्रेष्ठता सिद्ध की जा सकती है—

शीर्षक—"बूढ़ी काकी" इस कहानी की मुख्य पात्र है। उसी के नाम को "बूढ़ी काकी" शीर्षक सार्थक करता है। शीर्षक संक्षिप्त होते हुए भी अपने में कहानी के तत्व संजोए हुए हैं। सम्पूर्ण कहानी शीर्षक के आधार पर ही टिकी हुई है।

कथानक—कथानक की दृष्टि से बूढ़ी काकी एक श्रेष्ठ कहानी है। कथा संक्षिप्त होने के साथ ही साथ बोधगम्य भी है। कहानीकार ने अनेकानेक घटनाओं एवं प्रसंगों के वर्णनों में कहानी को न उलझाकर सीधे सादे रूप में जीवन के एक अंग बुढ़ापे को लिया है। और उसी अंग को उसने भावों की तूलिका से रंग-बिरंगा रूप प्रदान किया है। घटनाओं की दृष्टि से कथानक सुगठित एवं रोचक है।

पात्रों का चयन—पात्रों को चुनने में जितनी कुशलता प्रेमचन्द जी दिखाते हैं अन्य कोई कहानीकार नहीं। पात्र कम होने से पाठक का मन निरन्तर कहानी के पढ़ने में लगा रहता है वह अन्य कहानियों की तरह विभिन्न पात्रोंके विभिन्न प्रसंगों ही में न फंसकर कहानी का अत्यधिक रसास्वादन करता।

है। कहानी के तीनों पात्र रूपा, बूढ़ा काकी तथा बुद्धिराम के साथ-साथ लाड़ली भी वातावरण, समय एवं अवस्थानुकूल चुने गये हैं।

उत्सुकता—कहानी का शीर्षक पढ़ने मात्र से प्रत्येक पाठक के मन में उत्सुकता जगी रहती है बूढ़ी काकी के बारे में। मध्य में आकर उत्सुकता चरम सीमा पर पहुंच जाती है जो अन्त में ही जाकर समाप्त होती है।

संवाद—प्रेमचन्द जी की अन्य कहानियों की तरह यह कहानी भी संवादों की दृष्टि से उत्तम है संवाद संक्षिप्त एवं रोचक हैं। पात्रों के संवाद स्वयं पात्रों का चित्र सा पाठकों के सम्मुख खीच देते हैं। भतीजे की बहु के निम्न संवाद कितने संजीव एव रोचक है देखते ही बनते हैं—

"नाक कटवाकर दम लेगी। इतना ठूंसती है, कि न जाने कहां भस्म हो जाता है।" बेचारी बेसहारा बूढ़ी औरतों को ये ताने रोज ही सुनने पड़ते हैं। लाडली के निम्न संवाद भी बहुत ही सुन्दर प्रतीत होते हैं। जब वह काकी से कहती है।

'नहीं ये मेरे हिस्से की है ?'

काकी पेट भर गया ?

उद्देश्य—प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य कहानी पढ़ने के पश्चात पाठकों को स्वय ही पता चल जाता है। वे समझ जाते हैं कि आज की पीढ़ी किस तरह अपने बड़ों का निरादर करती है। और अन्त में नई पीढ़ी को अपनी भूल ज्ञात भी हो जाती है। लेखक का उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य के लिये अनुकरणीय हैं।

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद—अन्य कहानियों की तरह प्रेमचन्द जी का यथार्थवाद से आदर्शवाद की ओर मोड़ दिया है। वह भतीजे की बहु की कठोरता को बताने में जहां यथार्थ चित्रण करता है वहां आदर्श के रूप में उनके द्वारा पश्चाताप भी करा देता है। इस तरह वह बूढ़ी काकी के चरित्र को भी चित्रित करता है।

भाषा—प्रेमचन्द जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सदैव ही पात्रानुकूल भाषा अपनाते हैं। वाक्य छोटे-छोटे तथा सरस हैं। बूढ़ी काकी में प्रेम

चन्द जी ने शब्द चयन भी बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। चटखारे भरना, जमीन तक खिसक गई आदि-आदि अनेक मुहावरों को प्रेमचन्द जी ने यथा स्थान बड़े ही सुन्दर ढंग से अपनाया है।

चरित्र चित्रण—चरित्र चित्रण के विषय में प्रेमचन्द जी के बारे में जितना कहा जाए उतना थोडा है। उनकी लेखनी एवं कुशलता से कहानी के चारों ही पात्रों-बुद्धिराम, रूपा, बूढ़ी काकी तथा लाडली के चरित्र को समय तथा वातावरण के साँचे में ढालकर प्रस्तुत किया है। इसमें वे पूर्णतया सफल रहे हैं।

अन्तद्वन्द्व के सुन्दर चित्र—कहानी का मुख्य आधार प्रेमचन्द जी ने बूढ़ी काकी के हृदय में उत्थान–पतन होते विचारों को बनाया है। मेहमान भोजन कर रहे हैं। स्वाभावत: का मन भी ललचाता है। वह सोचती है कि जाऊं या न जाऊं। फिर सोचती है विना बुलाए नहीं जाऊंगी। यह विचार जैसे ही मस्तिष्क पटल पर आता है वैसे ही चला जाता है और काकी मन की बात न दवा सकने के कारण कड़ाह के पास आ बैठती है। बुढ़ापे मे ऐसा ही अन्तंद्वन्द्व प्रत्येक मनुष्य के मन में हुआ करता है।

कहानी आरम्भ और अन्त—कहानी का आरम्भ बूढ़ी काकी को लेकर होता है। अन्त भी उसी पर हो जाता है अतएव कहानी का आरम्भ रोचक तथा उत्सुकता वर्धक एवं सुखान्त है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर सिद्ध की जा सकती है 'बूढी काकी प्रत्येक दृष्टि से एक उत्तम कहानी है।"

प्रश्न १५—"बूढ़ीं काकी" का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—बूढ़ी काकी विधवा स्त्री है। उस बेचारी का अपना कोई भी नहीं। उसके चरित्र में निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य हैं।

दुनिया के प्रपंचों से दूर—'बूढ़ी काकी' का इस सारी दुनिया में कोई भी नहीं है। वह संसार के प्रपंचों से बहुत ही दूर है तभी तो वह बिना सोचे समझे अपनी सारी सम्पत्ति अपने भतीजे के नाम कर देती है। वह संसार के छलावों से दूर एक सीधी-सादी नारी है तभी तो वह नहीं सोच पाती कि भतीजा उसका धन प्राप्त कर उसके साथ बुरा व्यवहार भी कर सकता है।

बुद्धिमान नारी—बूढ़ी काकी ने अपने बाल यूं ही धूप में सफेद नहीं किये हैं। उसने अपनी लम्बी उम्र में अनेक अनुभव प्राप्त किये हैं। रूपा का अपशब्द सुनकर भी वह चुप रहना ही उचित समझती है बाद में जब रूपा उसके लिये भोजन लाती है तो वह उसे ढेरों सारी शुभ कामनाएं प्रकट कर देती है। निम्न स्थल इसके लिये विशेष दृष्टव्य है—

"भोले-भाले बच्चों की भांति, जो मिठाइयां पाकर मार तिरस्कार भूल जाते हैं, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भुलाकर बैठी हुई खाना खा रही थी। उनके एक एक रोयें से सच्ची सदिच्छायें निकल रही थी और रूपा बैठी इस स्वर्गिक आनन्द को लूटने में निमग्न थी।

प्रश्न है कि वह क्यों रूपा के कठोर शब्दों को भुला देती है? क्योंकि वह बहुत समझदार है और जानती है छोटों की आदत ऐसी होती है।

परिवार के सम्मान का ध्यान—यद्यपि बुद्धिराम ने सम्पत्ति लेते समय बूढ़ी काकी से अनेक वायदे किये थे। परन्तु शीघ्र ही वह भूल जाता है। काकी चाहती तो उस पर मुकदमा चला सकती थी या पचायत बुला सकती थी कि घर की बात कोई दूसरे सुनकर हंसी उडायें। इसी कारण से तो वह बहु की फटकार भी सुनकर चुप ही रहती है।

तृष्णा की अधिकता—बुढ़ापे में सोई हुई सभी तृष्णायें फिर से जाग उठती हैं। काकी के मन में भी कड़ाहे के पास बैठकर गर्म गर्म पूरी खाने की इच्छा प्रज्वलित होती है। यद्यपि यह उचित नहीं है। परन्तु ऐसा होना स्वभाविक भी है। अतएव काकी में तृष्णा का आधिक्य मूल प्रवृत्ति के कारण है न कि काकी का अवगुण है।

कष्टों को सहने वाली—अपने योवन से लेकर मरना तक बेचारी काकी दुःख ही झेलती रही। अनेक कष्ट आये पर वह अचल खड़ी सदैव ही सहती रही। यह उसके चरित्र की प्रमुखतम विशेषता रही है।

इस प्रकार प्रेमचन्द जी एक बुढ़िया के रूप में काकी का सजीव चित्र

खींचा है। उसके चरित्र में यथार्थ तथा आदर्श दोनों ही रूपों में प्रेमचन्द ने झांक कर देखा है।

आकाश दीप

(लेखक---श्री जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न १६---श्री जयशंकर प्रसाद जी का परिचय देते हुए 'आकाश दीप' कहानी का सारांश दीजिये।

उत्तर--प्रतिभा पुञ्ज, उद्‌भट विद्वान श्री जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सम्वत् १६४६ वि० में काशी नगरी में हुआ था अल्प आयु मे ही प्रसाद जी को सारे घर का बोझ सम्भालना पड़ा। प्रसाद जी अनेक विषम परिस्थितियों के कारण पाठशाला या महाविद्यालय में नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त नही कर सके हैं। घर पर ही रह कर उन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के साथ साथ दर्शन शास्त्र का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया वे सदैव ही एकान्त प्रिय रहे हैं। वे बड़े ही उदार एवं भावुक प्रकृति के थे। कहानीकार के अतिरिक्त प्रसिद्ध नाटककार, उपन्यासकार एवं महान कवि के रूप में भी इन्होंने मां सरस्वती की अत्यधिक सेवा की है। प्रसाद जी एक महान युग प्रवर्तक थे। कठिनाइयों के मेघों के बीच यह चन्द्रमा सदैव ही हिन्दी साहित्य जगत को अपनी निर्मल शुभ्र प्रभा मे आलोकित करता रहा। अचानक ही इसे ग्रहण लग गया और सम्वत् १६६४ वि० में यह साहित्य-अकाश का चन्द्रमा सदा सदा के लिये अस्त हो गया।

'प्रसाद' जी ने हिन्दी साहित्य का अपनो अनुपम रचनाओं से जितना शृंगार किया है उतना अन्य कोई भी साहित्यकार नहीं कर सका है। अपने नये विचारों एवं नवीन शैली के कारण प्रसाद जी युगनायक माने जाते हैं। इन्होंने सामयिक राजनैतिक एवं सामाजिक समस्याओं को निकट से देखा और परखा है। उनका सुन्दर समाधान भी इन्होंने अपनी कृतियों में किया है। 'प्रसाद सरीखे विश्व में कोई विरले ही हुए होंगे जिन्होंने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में कृतिया रचकर सफलता प्राप्त की हो।

सारांश—भीषण ठण्ड पड़ रही थी ऐसे में चम्पानगरी में दो बन्दी ठण्ठ से सिकुड़े जा रहे हैं। उनमें से एक पुरुष तथा दूसरी स्त्री है जैसा कि कहानी के आरम्भ में होने वाले वार्तालाप से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। ये दोनों ही परस्पर प्रस्तुत कहानी के नायक तथा नायिका है। पहले बन्दी ने अपने आप का स्वतन्त्र कर लिया है। दूसरे को भी वह स्वतन्त्र कर देता है। दोनों एक नाव में बैठ कर तेज आँधी में निकल कर जाते है। बुद्ध गुप्त अर्थात् बन्दी को इसी मध्य, एक अन्य युवक से द्वन्द युद्ध करना पड़ता है। बुद्ध गुप्त विजयी होता है।

समय बीतता रहता है। चम्पा वही युवती है जिसे बुद्ध गुप्त बन्दी गृह में से छुड़ा कर लाया था। वह उससे प्रेम करने लगती है। दानों के मध्य समय के कुचक्र के कारण एक तूफान आ खड़ा होता है वह बुद्ध गुप्त को अपने पिता का हत्यारा समझ उससे घृणा करने लगती है यद्यपि वह बुद्ध गुप्त के लिए प्राणों की आहुति तक देने को तैयार है परन्तु उसके मन से यह सन्देह नहीं निकाला जा सकता कि बुद्ध गुप्त उसके पिता का हत्यारा नहीं है। बुद्ध गुप्त चम्पा को पहाड़ी पर एक प्रकाश गृह बनवाने का वचन देता है।

अपने वचनानुसार बुद्ध गुप्त पहाड़ी पर आकाश दीप का निर्माण आरम्भ करता है। आदिवासी आकाशदीप के निकट उत्सव मनाते हैं। जया एक आदिवासी नारी चम्पा को बताती है कि रानी का विवाह होगा। बुद्ध गुप्त तो इस प्रस्ताव को मान लेता है। परन्तु अभी तक चम्मा के हृदय में बदले की आग दहक रही है। महानाविक बुद्ध गुप्त चम्पा से कहता है "चलो चम्पा। पोतवाहिनी पर असंख्य धन-राशि लादकर जन्म भूमि के अङ्क में।" चम्पा प्रत्युत्तर में कहती है "प्रिय नाविक! तुम स्वदेश लौट जाओ विभवों का सुख भोगने के लिये और मुझे छोड़ दो इन निरीह भोले भाले प्राणियों के दुःख में सहानुभूति और सेवा के लिये।" बुद्ध गुप्त चला जाता है वह अश्रु-पूर्ण नेत्रों से विदाई देती है। और फिर चम्पा आजीवन उस दीप स्तम्भ में आलोक जलाती ही रही। एक दिन काल के कठोर हाथों ने उसे भी अपनी चञ्चलता से गिरा दिया

प्रश्न १७—'आकाश दीप, कहानी की आलोचना कीजिए।

अथवा

"आकाश दीप' कहानी के आधार पर प्रसाद जी की कहानी कला प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रसाद जी की प्रस्तुत कहानी वर्णनात्मक श्रेणी की कहानी है उक्त कहानी में निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य हैं—

शीर्षक—प्रस्तुत कहानी के शीर्षक की मुख्य विशेषता यह है कि शीर्ष रहस्यपूर्ण संक्षिप्त एवं उत्सुकता को बढ़ावा देने वाला है। 'आकाश दीप एक स्थान पर तो चम्पा के माता-पिता की स्मृति चिन्ह हैं दूसरे पति महानाविक के लिये पथ-प्रदर्शक भी। यह आकाश दीप ही पिता स्मरण करता है दूसरी ओर प्रेमी के प्रति तीव्र अनुराग उत्पन्न करता है। इस प्रकार कहानी का शीर्षक "आकाश दीप" उत्सुकता वृद्धि के साथ ही साथ कहानी की कथावस्तु से भी सम्बन्धित है।

कथानक—प्रस्तुत कहानी का नथानक सरल होने के साथ ही सार पाठकों को रुचिकर भी प्रतीत होता है। कथानक में घटनाओं को कम स्थान मिलने के कारण कथानक उलझने नहीं पाया है। वैसे वर्णनों का आधिक्य अवश्य है। इसके लिये लेखक पाठकों को प्रवाहपूर्ण वनाने के लिये कहीं कहीं प्राकृतिक सौन्दर्य का भी वर्णन करता है। यथा—

,सामने शैलमाला की चोटी पर हरियाली में विस्तृत जल-प्रदेश में नील पिंगल सन्ध्या, प्रकृति की एक सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया स्वप्न लोक का सृजन करने लगी।

+ + + +

"तारक खचित नील अम्बर और समुद्र के अवकाश में पवन उधम मचा रहा था। अन्धकार में मिल कर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र में आन्दोलन था। नौका लहरों में विकल थी।"

इस प्रकार प्रकृति का सूक्ष्म वर्णन करके प्रसाद जी कहानी में भी काव्य का सा रस ले आते हैं। इससे पाठक अत्यधिक रसास्वादन कर पाता है।

संवाद—इस कहानी के संवादों को सर्वश्रेष्ट संवाद कहा जा सकता है। इसमें संवाद प्रभावशाली एवं संक्षिप्त है। मनोवैज्ञानिकता कीं पुट से ये और अधिक सुन्दर दिखाई देते हैं। प्रत्येक संवाद स्वाभाविक एवं सजीव प्रतीक होता है। कहानी का आरम्भ ही कहानं कार ने संवादों से आरम्भ किया है—

"बन्दी !"

"क्या है ? सोने दो।"

"मुक्त होना चाहते हो

अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।"

"फिर अवसर नहीं मिलेगा।"

उपर्युक्त संवादों को पढ़ते समय एक सोए हुए बन्दी का चित्र आंखों के सामने आ जाता है। सोते हुए व्यक्ति को यदि जगाया जाये तो वह बन्दी वाला ही उत्तर देगा। प्रस्तुत कहानी के संवाद ऐसे लगते हैं मानों ये संवाद किसी नाटक के हों।

भाषा—प्रस्तुत कहानी में भाषां अवश्य ही दुरुह अपनायी गई है। इसमें प्रसाद जी ने संस्कृत गर्भित हिन्दी का प्रयोग किया है। भाषा साहित्यिक होते हुए भी आदि से अन्त तक कहानी प्रवाह पूर्ण हैं। शब्द चयन की दृष्टि से कहा जा सकता है कि कुछ कठिन शब्दों को ही अपनाया गया है। वाक्य विन्यास भी कुछ कठिन सा ही प्रतींत होता है। इतना होने पर भी कथानक पर कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

उद्देश्य—प्रस्ताव कहानी में 'प्रसाद जी' का उद्देश्य चम्पा को एक आदर्श एवं अनुकरणीय पात्र के रूप में प्रस्तुत करना रहा है। वह अपनेको बहुत प्यार करतीं है और उसीं स्नेह स्मृति में वह अपना सारा जीवन एकांकी रह कर हीं काट देती है। वह इसके लिये अपने प्रिय बुद्ध गुप्त तक त्याग कर देती है।

कहानी का आरम्भः—कहानीकार प्रसाद जी ने आकाश दीप' कहानी का आरम्भ बड़े ही सुन्दर एवं रोचक ढ़ंग से किया है। शुरू से ही पाठक के मन मन्दिर में जिज्ञासा उठती हैं और वह कहानी के विकास के साथ-साथ

बढ़ती जाती है। आरम्भ में कहानी को संवाद से आरम्भ कर उन्होंने और अधिक रोचक बना दिया है।

कहानी का अन्त—आकाश दीप कहानी दुखान्त है। अन्त में महानायक जब प्रस्थान करता है और चम्पा की आंखें आंसुओं की झील सी बन जाती है तो पाठकों का हृदय भी रसासिक्त हो उठता है। नायक तथा नायिका दोनों ही पाठकों की सहानुभूति प्राप्त करते हैं।

अर्न्तद्वन्द्व—चम्पा बुद्ध गुप्त को अपने पिता का हत्यारा समझ कर उसे घृणा करने लगती है। परन्तु एक प्रेमिका होने के कारण उसके हृदय मन्दिर में पुनः पुनः प्रेमाधिक्य के कारण तरंगे सी उठती हैं। इस प्रकार से कभी घृणा तो कभी प्रेम के भावों में चम्पा के हृदय में निरन्तर आन्तरिक संघर्ष चलता रहता है। इसके लिये निम्न संवाद दृष्टव्य हैं—

'भगवान मेरे पथ भ्रष्ट नाविक को अन्धकार में ठीक पथ पर ले चलना।"

मेरी मां ! आह नाविक ! यही उसी की स्मृति है। मेरे पिता—वीर पिता की मृत्यु के निष्ठुर कारण जल-दस्यु दूर हट जाओ।

× × × ×

"जब मैं अपने हृदय में विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूं ? मैं तुम्हें घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिये मर सकती हूं। अन्धेरा है जल दस्यु ! तुम्हें प्यार करती हूं "चम्पा रो पड़ी।" इस प्रकार इन उदाहरणों को देखने पर ज्ञात होता है कि किस तरह निरन्तर चम्पा के हृदय में भावों का उत्थान पतन होता है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर सिद्ध किया जा सकता है कि 'आकाश दीप' हिन्दी की एक सर्वथा अनूठी एवं सर्वोत्कृष्ट कृति है।

प्रश्न १८—'आकाश दीप' कहानी के किसी मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण कीजिये।

उत्तर—चम्पा आकाश दीप की नायिका है। प्रसाद जी की अन्य कहानियों की तरह इस कहानी में स्त्री पात्र ऐतिहासिक नहीं हैं अपितु प्रसाद जी' ने उसे स्वयं ही अपने मस्तिक से चित्रित किया है। वह कर्त्तव्य की साकार

प्रतिमा है। प्रेम उसमें नख से शिख तक भरा हुआ है। वह एक ओर पिता से स्नेह करती है तो दूसरी ओर बुद्ध गुप्त से भी। उसके चरित्र में निम्न विशेष रूप से दृष्टव्य है—

वीर नारी-चम्पा में साहस कूट-कूट कर भरा है। लेखक उसको एक बन्दी के रूप में प्रस्तुत करता है वह आरम्भ में ही चपलता एवं वीरता का परिचय देती है। वह अन्य स्त्रियों की तरह डरपोक नही है। वह शौर्य एवं साहस से परिपूर्ण हैं। बढ़ते हुए भयंकर तूफान में भी वह मुक्त होने के लिये असीम साहस का परिचय देती है। उसकी निर्भयता निम्न से स्पष्ट हो जाती है—

बन्दी—'यह क्या ? तुम स्त्री हो ?"

चम्पा—"क्या स्त्री होना पाप है ?"

"चम्पा ?"

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है वह महान वीर है।

सच्ची प्रेमिका—नख से शिख तक चम्पा पूरी तरह प्रेम के रंग में रंगी हुई है। यद्यपि उसे बुद्ध गुप्त पर सन्देह हो जाता है कि वह उसके पिता का हत्यारा है। उसे घृणा करने लगती है। परन्तु अन्त में वह प्रेम के वशीभूत हो बुद्ध गुप्त से पहले की तरह प्रेम करने लगती है। वह कहती है—

"मैं तुम्हें घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिये मर सकती हूं। अंधेरे में जलदस्यु ! तुम्हें प्यार करती हूं।"

इस प्रकार पता चलता है कि यद्यपि कभी-कभी कर्त्तव्य उसके प्रेम-पथ में पत्थर बन कर रुक जाता है। परन्तु वह आशा एवं धैर्य की शक्ति से इस पत्थर को हटा देती है। उसे फिर से सात्विक प्रेम दृष्टिगोचर होने लगता है।

त्यागमयी—चम्पा में प्रेम और बलिदान दोनों ही बराबर रूप में समाए हुए हैं। एक ओर वह प्रेम करती है बुद्ध गुप्त से तो दूसरी ओर वह उसको अकेला जाने के लिये भी कहती है—"तुम स्वदेश लौट जाओ विभवो को सुख भोगने के लिए।" इस प्रकार वह उस निर्जन दीप में अकेली ही रह जाती है। और अन्त में वह अपने पिता की स्मृति में आत्म त्याग कर महानतम

त्याग का परिचय देखकर सारी नारी जाति का मस्तक ऊंचा उठा देती है।

समाज सेवा—त्यागमयी मूर्ति के साथ चम्पा में समाज सेवा का भाव बहुत अधिक मात्रा में भरा हुआ है। वह अकेली रहकर दीपके निवासियों की सेवाव्रत लेती है—मुझे छोड़ दो इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दुःख में सहानुभूति और सेवा के लिये।

स्वतन्त्रता प्रेमी—चम्पा बन्दी गृह में वन्दीं जीवन व्यतीत नहीं करना चाहती। वह सदैव ही बन्धन मुक्त होने का प्रयास करती है। जब बुद्ध गुप्त उसे बता देता है कि भयंकर तूफान चल रहा है और शैलखण्ड से टकरा कर नांव टूट सकती है तो वह प्रत्युत्तर में कहती है—

"अच्छा होता बुद्धगुप्त ! जल में वन्दी होना कठोर प्राचीरों से तो अच्छा है।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि चम्पा एक प्रेम और त्याग के मिश्रण से बनी महान नारी है। उसका चरित्र नारी जाति के लिसे अनुकरणीय है वह एक आदर्श रूपी स्त्री है। जो प्रेम को ही बलिदान का दूसरा रूप मानती है।

—::—

रक्षा बन्धन

(लेखक—श्री विशम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक')

प्रश्न १६—श्री विशम्भर नाथ कौशिक जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए "रक्षा बन्धन" कहानी का साराश लिखिए।

उत्तर—हिन्दी जगत के प्रसिद्ध लेखक श्री विशम्वर नाथ कौशिक जी का जन्म अम्बाला छावनी में एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता फौज में नौकरी करते थे। चार वर्ष की अल्पायु में इनको एक निसत्तान बाप ने कौशिक जी को गोद ले लिया। स्कूल में कौशिक जी मैट्रिक तक ही पढ़ सके। आगे किन्हीं कारणों से शिक्षा का क्रम रुक गया। अपने स्कूल में उर्दू तथा फारसी का ज्ञान प्राप्त किया। घर पर स्वाध्याय से हिन्दी एव संस्कृत

का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। आरम्भ में कौशिक जी उर्दू में कविताएं लिखा करते थे। सन् १९११ ई० में उन्होंने हिन्दी में लिखना आरम्भ किया। सन् १९१२ में आपकी सबसे पहली कहानी "रक्षाबन्धन" प्रकाशित हुई इन्होंने हिन्दी साहित्य को कई सौ कहानियां प्रदान की है। पारिवारिक चित्रों को इन्होंने अपनी कहानी में बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से दिया है।

सारांश—श्रावण की धूम-धाम है। रक्षाबन्धन का पर्व आ गया है। एक बालिका मां से कहती है मां मैं भी राखी बाँधूगी। उसका कोई भाई नहीं है। मां समझाते हुए कहती है किसके बांधोगी बेटी। राखी तो भाई के हाथ में ही बांधी जाती है। बालिका उदास हो जाती है। मां कहती है आ तुझे नहला दूं। बालिका इन्कार कर देती है। माता उसे डांटती है। इस पर बेचारी बालिका आंसू में आंसू लिए नहाने को तैयार हो जाती है।

बालिका द्वारा पर खड़ी आने जाने वाले राहगीरों को देख रही है। कई आते हैं और उसकी ओर बिना देखे चले जाते हैं। एक युवक ठिठक कर खड़ा हो गया। उसने बालिका की आंखों में आंसू देखे। तब वह अधीर हो उठता है। वह उससे रोने का कारण पूछता है। तभी वह देखता है कि बलिका के हाथों में एक लाल डोरा है। वह सब कुछ समझ जाता है और अपना दाहिना हाथ आगे कर देता है। बालिका खुश हो बड़े चाव से युवक के हाथ में राखी बांध देती है।

गोयलगंज (लखनऊ) की एक बड़ी तथा सुन्दर अट्टालिका के एक सुन्दर कमरे में विचार मग्न युवक बैठा है। युवक का नाम घनश्याम है। वह अपनी माता और बहन से बिछुड़ जाता है। बहुत प्रयास करता है पर वे उसे कहीं नहीं मिलता है। वह अपने मित्र अमरनाथ से वार्तालाप कर रहा है। वह कहता है—संसार में यदि बढ़िया से बढ़िया राखी बन सकती है तो मुझे उससे भी कहीं अधिक प्यारी है यह लाल डोरी। वह राखी का सारा प्रसंग सुनाता है कि कैसे एए बालिका ने उसके हाथ में लाल डोरा बांधा है।

इस घटना को हुए पांच वर्ष बीत जाते हैं। घनश्याम पिछली बातें प्रायः

भूल गये हैं। वह अभी तक अविवाहित है। घनश्याम के घर उसके कई मित्र आये हैं। वे घनश्याम से विवाह कर लेने का परामर्श देते है। थोड़ी देर बाद अमरनाथ आकर सूचना देता है कि उसने घनश्याम के लिये लड़की देख ली है। यहीं लखनऊ में। घनश्याम कहता है कि वह लड़की देख कर ही विवाह करेगा। अगले दिन वे लड़की देखने का आयोजन कर लेते हैं।

दूसरे दिन शाम को घनश्याम और अमरनाथ गाड़ी पर सवार होकर लड़की देखने च.। अमरनाथ उसे वृद्धा के घर ले जाता है। सन्ध्या के आ जाने से चारों ओर अन्धकार छा जाता है। वृद्धा स्त्री कहती है मैं जरा दिया जला लूं। अमरनाथ कहता है हां जला लो। प्रकाश में ज्यों ही घनश्याम पर उसने दृष्टि डाली वह वेहोश हो गई। घनश्याम उसे उठाता है वह वृद्धा का चेहरा देखते ही कहता है मेरी माता! और वे कह कर भूमि पर वैठ गये वृद्धा थोडी देर बाद होश में आ जाती है। वह घनश्याम को छाती से लगा लेती है। आज भी भैया दूज का दिन था। घनश्याम लड़की को पहचान लेता है यह वहीं लड़की थी जिसने उसके हाथ में लाल डोरा बांधा था। मां-बेटा भाई बहन दोनों एक दूसरे से मिल जाते हैं।

प्रश्न २०—'रक्षा-बन्धन" कहानी की आलोचना कीजिये।

अथवा

कौशिक जी की कहानी कला की आलोचना कीजिए।

अथवा

"रक्षा-बन्धन कहानी की विशेषताएं बताइये।

शीर्षक—कहानी का सम्पूर्ण कथानक एक शब्द अर्थात् "रक्षा—बन्धन" पर ही आधारित है। कहानी का शीर्षक संक्षिप्त एवं सारगर्भित है। "रक्षा बन्धन" शीर्षक पढ़ने मात्र से ही पाठक के मन में उत्सुकता का निरन्तर विकास होने लगता है। आदि से अन्त तक शीर्षक की सार्थकता सिद्ध होती है।

पात्र—कहानीकार ने एक साथ कई घटनाओं एवं प्रसंगों को न लेकर पात्रों के चित्रण पर विशेष ध्यान दिया है। घटनाएं तथा प्रसंगों में कमी होने

के कारण पाठक कहानी में कहीं भी उलझन महसूस नहीं करता है। कहानी में सीमित पात्रों को लेकर उनके ही चरित्र चित्रण को सजाया है जिससे कहानी सजीव हो उठती है।

कथानक—प्रस्तुत कहानी का कथानक सरल एवं बंघगम्य है। पाठक कथानक के इस गुण के कारण कहानी का भाव ही सरलता से समझ जाता है। एक युवक अपनी माता पिता और बहन से बिछुड जाता है। समय चलता रहता है और फिर अन्त में तीनों पात्र मिल जाते हैं। इस छोटे से कथानक को कौशिक जी ने बड़ी रोचक एव सुन्दर शैली में प्रस्तुत किया है

चरित्र चित्रण—चरित्र चित्रण के आधार पर कौशिक जी की उक्त रचना सफल रही है। प्रत्येक पात्र का चित्रण उन्होंने स्वाभाविक एवं बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। बेटे से मिलने की खुशी में मां मूर्छित हो जाती है इसमें मां का कितना आदर्शमय सुन्दर तथा स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

उत्सुकता–जब लड़की युवक राखी के हाथ में बांधती है, तो प्रश्न होता है लड़की कौन है। राखी उस ही युवक के क्यों बांन्धी गई आदि प्रश्न उत्सुकता के रूप में बनते रहते हैं।

कहानी का आदि और अन्त—कहानी का आरम्भ बड़ा ही रोचक रहा है। कहानी रक्षा बन्धन के दिन से आरम्भ होती है। लड़की बेचारी द्वार पर खडी आसू बहा रही है हाथ में लाल डोरी लिये हुए। प्रत्येक पाठक की दृष्टि में वह लड़की सहानुभूति का पात्र बन जाती है कहानी का अन्त सुखांत है जो पाठकों की रुचि के अनुसार ही किया गया है।

इन सब गुणों से सम्पन्न होते हुए भी कहानी में अनेक त्रुटियां रह गई है। घनश्याम यद्यपि लखनऊ में ही रहता है तो भी वह कभी अपनी माता और बहन से नहीं मिल पाता है। यद्यपि रक्षा बन्धन वाले दिन काफी लोग दरवाजे के आगे से गुजरते हैं परन्तु युवक को ही लेखक ने रुकता दिखाया है इसे संयोग ही कहा जा सकता है। रक्षा-बन्धन की घटना की पुनरावृत्ति पाठक ने कथानक के विस्तार के लिये नहीं की है तो और किस लिये की है,

और फिर एक एक घटना संयोग के आधार पर ही घटित होती है। यह भी एक संयोग ही है कि अमरनाथ जिस के घर घनश्याम को ले जाते हैं। वही उसकी माता और बहन है।

परन्तु क्योंकि यह कहानी कौशिक जी की प्रथम कहानी है अतएव इन सब दोषों को ध्यान में न रख कर कहा जा सकता है कि कहानी अपनी मार्मिकता के कारण सफल रही है।

अमर जीवन

(लेखकः— सुदर्शन)

प्रश्न २१—सुदर्शन जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए अमर जीवन कहानी संक्षेप में बताइये।

उत्तरः–प्रस्तुत कहानी के लेखक श्री सुदर्शन जी का जन्म सन् १८९६ वि० में स्यालकोट जिले में हुआ था। आरम्भ का नाम बदरी नाथ था। साहित्विक क्षेत्र में ये सुदर्शन नाम से प्रसिद्ध हुए, बचपन से ही ये साहित्यिक धुन के पक्के थे। आपने आर्य समाज के प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए एक पत्र का भी सम्पादन किया है। आप कला जीवन के लिये मानते हैं न कि कला कला के लिये। आरम्भ में ये उंर्दू में लिखा करते थे परन्तु बाद में ये हिन्दी में लिखने लगे। तत्पश्चात् आपने सिनेमा जगत् में प्रवेश किया। सुदर्शन जी रचनायें प्रायः प्रेम चन्द जी की शैली पर ही आधारित हैं। सुदर्शन जी का कहना है:— हमें ऐसी कहानियां लिखनी चाहिए, जिनका प्रभाव राष्ट्र और समाज पर अमिट हो वह तभी हो सकता है जब हमारे समाज और राष्ट्र की बातें ही कहानी में हों।"

कहानी का सारांशः— बाबू इन्द्र नाथ की लेखनी शैली में एक अनोखा जादू छिपा था। वे एक अच्छे लेखक थे। यद्यपि उनकी आयु लगभग पच्चीस की है परन्तु उनकी सभी कविताओं में एक अनोखी कल्पना एवं मधुर रस छिपा हुआ है। उनके निबन्ध पढ़कर लोग मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। वे जो कुछ कहते हैं सरल शब्दों और संक्षेप में। इन दो ग्रन्थों-'भावसुषमा' और 'सोम सागर' ने अत्यधिक सफलता प्राप्त की है। परन्तु उनकी आर्थिक दशा सन्तोष

जनक नहीं थी। और सदैव ही वे अनेकानेक आर्थिक कष्ट से घिरे रहते थे।

एक दिन प्रातः की स्वर्णिम वेला में वे पुस्तक के पन्ने उलटते मुस्करा रहे थे पत्नी मनोरमा ने पूछा—"क्यों क्या है, जो इतने प्रसन्न हो रहे हो ?" वे बताते हैं कि भाव-सुषमा' की समालोचना में बड़ी प्रशंसा की गई है। वे समालोचना पढ़कर जैसे सुनाने लगते हैं कि इसी बीच किसी ने पुकारा–'बाबू इन्द्रनाथ'। पता चला कि मकान मालिक है किराया मांगने आए हैं। वह मनोरमा को कहता है कि उसका मन नौकरी करने को चाहता है उसके कपड़े मैले हो गए थे। सन्दूक खोलकर देखा कपड़े धुलकर नहीं आये थे। दोनों उदास हो जाते हैं।

जिसका शब्द-शब्द सुनकर लोग श्रद्धा से नत मस्तक होते हैं आज वही प्रसिद्ध साहित्यकार पचास रुपये की नौकरी करने चला है। एक घन्टे बाद ये इन्द्रनाथ आफिस के सुपरिटेण्डेन्ट लाला रंगीलाल के कमरे में थे। वे एक पुस्तक पढ़ रहे थे। उन्होंने इन्द्रनाथ से हाथ मिलाया और बोले। मुझे केवल पांच मिनट की आज्ञा दीजिए। 'वे पुस्तक को पढ़ते-पढ़ते आंखें बन्द किये हुए बड़बड़ाने लगे–' वाह वाह ! क्या कहना" कितने ऊंचे विचार कितने पवित्र भाव" वे इन्द्रनाथ से आने का कारण पछते हैं। इतने में कमरे का द्वार खुला बड़े साहब अन्दर आ गये। रंगीलाल उनका अभिवादन करते हैं। और इसके बाद वे पुस्तक की प्रशंसा के पुल बाँधने आरम्भ कर देते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने आज तक हिन्दी में ऐसी पुस्तक नहीं देखी है। सहसा इन्द्रनाथ की दृष्टि पुस्तक के कवर पर गई। वे देखते के देखते ही रह जाते है। क्योंकि पुस्तक का नाम भाव-सुषमा था। जो कि इन्द्रनाथ ने स्वयं लिखी है। वह आश्चर्य और विस्मय से विचारों में खो जाता है और निश्चय करता है कि वह सिक्कों के बदले आत्म गौरव को नहीं बेचेगा।

वह घर आकर मनोरमा को बताता है कि लोग आते हैं चले जाते हैं। परन्तु जाति निर्माता सदैव जीवित रहते हैं। वह बताता है कि कवि महान होता है वह नवीनता का संचार करके राष्ट्रोन्नति का मार्ग दर्शन होता है। वह मनोरमा से हाथ थामते को कहता है, सहायता मांगता है मनोरमा श्रद्धाभाव

से पति की ओर देख मन्द-मन्द मुस्कराने लगी ।

प्रश्न २२—सुदर्शन जी की कहानी कला पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'अमर जीवन कहानी तर्क संगत है आलोचना कीजिये ।

सुदर्शन जी की कहानी का क्षेत्र काफी विस्तृत है इन्होंने है अपनी कहानियों की सामग्री का चयन अन्य देशों के प्रसंगों पर भी किया है प्रस्तुत कहानी 'अमर जीवन' को आलोचना करने के लिए निम्न शीषर्कों के अन्तंगत विभाजित किया जा सकता है–

शीर्षक—प्रस्तुत कहानी का शीर्षक अमर जीवन है । कहानी का मुख्य पात्र इन्द्रनाथ एक प्रसिद्ध साहित्य साधना में ही अपना सारा जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखता है । इस प्रकार से वे इस जीवन को जो साहित्य सेवा में ही बीते जीवन की संज्ञा देते हैं । इस भाव को लेकर कहानीकार ने उक्त शीर्षक का चयन किया है शीर्षंक सारगर्भित एवं संक्षिप्त होने के साथ ही कहानी की मूल भावना को भी अपने में छिपाए हुये हैं ।

कथावस्तु—कहानी का क्रम निरन्तर प्रवाह पूर्ण है । घटनाओं तथा प्रसंगों का आधिक्य न होने से 'अमर जीवन' कहानी की कथावस्तु सुगठित एव प्रभावोत्पादक है कथा अत्यन्त सरल है । एक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार आर्थिक कठिनाइयों से तंग आकर नौकरी करना चाहता है । परन्तु अन्त में वह निर्णय कर लेता है कि वह किसी भी मूल्य पर अपने आत्म गौरव को नहीं वेचेगा । इस प्रकार कहानी प्रत्येक पाठक पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है ।

उद्देश्य—कहानी का उद्देश्य 'सुदर्शन जी' को बताने की आवश्यकता नहीं पड़ी है । पाठक कहानी को पढ़कर स्वयं ही जान लेता है कि कहानी की मूल्य भावना यह है कि साहित्य सेवक को किसी भी मूल्य पर आत्म गौरव नहीं वेचना चाहिये । क्योंकि वह राष्ट्रनायक है । नवीनता का संचार करता है । कहानी का अन्त बताता है कि निरन्तर साहित्य साधना में रत रहना ही अमर जीवन है । यह कहानी का उद्देश्य है ।

कथोपकथन—कथोपकथन मन में गुदगुदी करने वाले तथा प्रभावोत्पादक

है। कहीं कहीं लेखक ने अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है। परन्तु ऐसा उन्हें पात्रों में स्वाभाविकता लाने के लिये करना पड़ा है। यथा—

"गुड-मार्निङ्ग"

"गुड-मार्निङ्ग ! यह किताब कैसा है ?

"हो आपको वहोत मालूम हुआ"

पात्रों का चयन—पात्रों की संख्या सीमीत है जिससे कहानी उलझी हुई नहीं है। पात्रों का चयन वातावरण तथा प्रसंग के अनुकूल किया गया है।

भाषा—कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल है। बड़े साहब के संवादों को लेखक ने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्दों से कहानी में और अधिक निखार आ गया है।

आदि और अन्त—यथार्थवाद को लेकर कहानीकार आज के साहित्यकार की विषम परिस्थितियों का चित्रण करता है। और मध्य में वह नायक को नौकरी करने का निश्चय करता हुआ दिखाता है। परन्तु फिर अन्त में वह साहित्यकार को निरन्तर साहित्य-साधना में प्रवृत्त होते हुए दिखाता है। इस प्रकार वह कहानी को आदर्शवाद के द्वार पर लाकर छोड़ता है।

चरित्र चित्रण—मनोरमा एक पतिव्रता नारी के रूप में तथा इन्द्रनाथ एक सच्चे साहित्यकार के रूप में पाठकों पर अमिट प्रभाव छोड़ जाते है। दोनों का चरित्र आदर्श रूप प्रत्येक नारी तथा नवीन साहित्यकारों के लिए अनुकरणीय है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि 'अमर जीवन' सफल कहानी होने के साथ-साथ एक आदर्श भी प्रस्तुत करती है जो नए साहित्यकारों के लिये उपयुक्त हैं।

प्रश्न २३—कहानी का नायक कौन है ? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिये।

उत्तर—(विद्यार्थीगण निम्न शीर्षकों के आधार पर कहानी के नायक इन्द्रनाथ का चरित्र चिरित्र करले)

(१) प्रतिष्ठित साहित्यकार।

(२) आत्म गौरव का जीवन बिताने का ध्येय।

(३) आर्थिक प्रश्न।

(४) दुखों को खुशी से सहने वाला

(५) सन्तोषी

(६) सफल पति

(७) सच्चा साहित्यकार

प्रश्न २४—मनोरमा का चरित्र चित्रण कीजिए।

(छात्र निम्न शीर्षकों के आधार पर यह प्रश्न तैयार करले)

(१) पतिव्रता।

(२) भावुक।

(३) सन्तोषी।

(४) सद्गृहणी।

(५) अच्छा स्वभाव।

(६) आदर्श रूपा।

—::—

शरणागत

(लेखक—श्रीवृन्दावनलाल वर्मा)

प्रश्न २५—वर्मा जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए शरणागत कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—परिचय–हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कहानीकार वृन्दावन लाल वर्मा जी का जन्म स० १९४७ वि० में झांसी जिले के अन्तर्गत मऊरानी नामक स्थान पर हुआ था। अल्पायु से ही आपको साहित्य–साधना में विशेष रुचि थी। बी० ए० के० एल० एस० बी० परीक्षा उत्तीर्ण की और वकालत करने लगे। सन् १९४२ के वाद आप वकालत कार्य छोड़कर मां सरस्वती के पूजन अर्चनमें लग गये। आपको इस क्षेत्रमें अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई। आपने उपन्यासों और कहानियों में ऐतिहासिकता लाकर कहानियों में एक मोड़ सा ला दिया है। आपको सामाजिक चित्रण करने में काफी सफलता मिली है आपके आदर्शवाद में राष्ट्रीयता की पुट स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

सांस्कृतिक चेतना भी आपकी कृतियों में यत्र-तत्र दृष्टि-गोचर होती है। उनके भावों की कृत्रिमता नाम मात्र को भी दिखाई नहीं देती है।

सारांश:—रज्जब अपना व्यापार करके ललितपुर लौट रहा है। साथ में स्त्री और गांठ में तीन सौ की रकम। उसकी पत्नी बुखार से पीड़ित थी। चलते-चलते शाम हो जाती है। वह एक ग्राम में अपने जानने वालों से रात भर ठहरने के लिये स्थान मांगता है। परन्तु सभी इन्कार कर देते हैं। क्योंकि वह जाति से कसाई जो था रज्जब किसी न किसी तरह एक ठाकुर के यहां पहुँच कर उसकी प्रशंसा कर रात में सोने के लिये स्थान प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

ठाकुर रज्जब का नाम पूछता है। तत्पश्चात् वह उससे कहता है कि तुम कार्य क्या करते हो। जब ठाकुर यह जान लेता है कि वह व्यापार करके आ रहा है तो उससे पूछता है कितना नफा हुआ है। आधी रात को कुछ लोगों ने ठाकुर को इशारे से बुलाया। वे सब डाकू हैं और ठाकुर उनका सरदार है वे ठाकुर से कसाई का धन चुराने को कहते हैं। परन्तु ठाकुर उन्हें घृणा-सूचक स्वर में कहता है—'कसाई का पैसा न छुएंगे। "क्यों ?" अन्य साथी प्रश्न करते हैं। वह कहता है—"बुरी कमाई है।" वे सब ठाकुर की बात का विरोध करते हुए कहते हैं हम तलवार से उसे शुद्ध कर लेंगे। वे देखते हैं कि कसाई, उसकी पत्नी आदि सभी सो रहे हैं।

सुबह हो चुकी है। रज्जब की पत्नी का बुखार हल्का था परन्तु उसके सारे शरीर में पीड़ा थी। वह अब एक कदम भी नहीं चल सकती थी। ठाकुर उन दोनों को ठहरा हुआ देखकर नाराज होता है। वह कहता है कि मैंने तुम्हें अपने यहां क्यों रहने दिया इस बात की चर्चा अब थोड़ी देर में सारे गांव में हो जायेगी। वह गुस्से में भर कर कहता है—"तुम बाहर जाओ इसी समय।" रज्जब गांव के बाहर अपनी पत्नी के साथ एक पेड़ के नीचे जा बैठा।

उसे आशा थी कि कुछ समय बाद उसकी पत्नी स्वस्थ हो जायगी तब वह पैदल चल देगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। एक चमार को काफी किराये पर

ललितपुर चलने के लिये तैयार किया । पांच-छः मील चलने के बाद शाम हो गई । रास्ते में किराये पर बात चीत करते करते रज्जब गाड़ीवान से विवाद कर बैठता है इतने में ही बैल ठिठक कर रुक गये । सामने से किसी ने गाड़ीवान को चेतावनी दी—"खबरदार' जो आगे बढ़ा । गाड़ीवान भागने का प्रयास करता है कि एक डाकू उसे पकड़ लेता है । डाकू पूछते हैं कि गाड़ी में और कौन है । वह उत्तर देता है—"ललितपुर का एक कसाई । डाकू रज्जब को मारने का निर्णय करते हैं । वह उनसे कहता है कि मुझ पर दया करो मेरी औरत बीमार है । वे हाथ छोड़ने को तैयार ही होते हैं कि उनका सरदार जो कि ठाकुर है उन्हें मना करता है । वह कहता है:—"बुन्देले शरणागत के साथ कभी घात नहीं करता, इस बात को गांठ बांध लेना ।"

प्रश्न २६:—कहानी कला की दृष्टि से "शरणागत" कहानी की आलोचना कीजिए ।

उत्तर:—प्रस्तुत कहानी "शरणागत" वर्मा जी की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है इस कहानी में निम्न विशेषतायें विशेष रूप से दृष्टव्य हैं:—

शीर्षक:—'शरणागत कहानी का शीर्षक एक शब्द में ही सारी कहानी का सार, अपने में छिपाए हुए है । कहानी के अन्त का भाव शीर्षक पढ़ने मात्र से ही पाठक को ज्ञात हो जाता है ।

उद्देश्य:—लेखक ने प्रस्तुत कहानी द्वारा बुन्देली आन तथा शान का परिचय दिया है । शरणागत को रक्षा करना मनुष्य मात्र का परम धर्म है । कहानी का अन्त भी इसी विषय को लेकर हुआ है ठाकुर के कथन से कहानी का उद्देश्य स्वयमेव ही स्पष्ट हो जाता है:—

"न आना, मैं अकेले ही कर गुजारता हूं । परन्तु बुन्देले शरणागत के साथ घात नहीं करता, इस बात को गांठ बांध लेना ।"

कथानक:—प्रस्तुत कहानी में घटनाएं कम हैं । जिससे कहानी में कहीं भी रुकावट प्रतीत नहीं होती है घटना में वास्तविकता दृष्टि-गोचर होने से कथानक में और अधिक निखार आ गया है । कहानी आदि से अन्त तक

रोचक एवं प्रवाह पूर्ण है।

संवाद--प्रत्येक पात्र का संवाद प्रभावोत्पादक होने के साथ ही साथ पात्र के उपयुक्त भी है। संवादों में लेखक ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। जिसमे पाठक सोचने लगता है कि यह वास्तविक घटना है और इस प्रकार उसके मस्तिष्क पटल पर घटना विशेष का चित्र सा उतर जाता है। यथा—

"तुम्हारा नाम ?"

",रज्जब !"

"कहां से आ रहे हो ?"

वहां किस लिये गये थे ?"

"काम तुम्हारा बहुत बुरा है।"

"क्या नफा हुआ ?"

आदि आदि संवादों में दो व्यक्तियों के वार्तालाप का चित्र सजग हो उठता है।

भाषा—वर्मा जी अपने विचारों को कृत्रिमता का आवरण नहीं देते हैं। उनके वर्णन और कथानक के साथ साथ भाषा अपने सहज रूप में आगे बढ़ती है और उसमें जरा सा भी दिखावा नहीं होता है। कहीं कहीं इन्होंने स्थानीय शब्दों को अवश्य प्रयुक्त किया है जिसको पाठक समझ नहीं पाते हैं।

आदि और अन्त--कहानी के पूर्वार्द्ध में दिखाया गया है कि एक कसाई को जब रात को सोने भर के लिये कोई भी स्थान नहीं देता है तो ठाकुर उसे अपने यहां ठहरा लेता है। उत्तरार्ध में दिखाया है कि वह ठाकुर डाकुओं का सरदार है और वह अपने शरणागत की रक्षा करता है।

प्रश्न २७--ठाकुर का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—ठाकुर डाकुओं का सरदार है। वह बुन्देली राजपूत है। वह शरणागत की रक्षा करना अपना परम धर्म मानता है उसके चरित्र में निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य हैं।

१. मानव प्रेमी--ठाकुर में दया भाव भरा हुआ है। वह मनुष्य से प्रेम करता है तभी तो वह कसाई को भी सोने के लिये स्थान दे देता है।

२. स्वाभिमानी—ठाकुर में स्वाभिमान की भावना कूट कूट कर भरी हुई है। वह राजपूत है और अपनी आन के लिये रज्जब को डाकुओं से छुड़ाता है।

३. उत्साही—वह अकेला ही कार्य करने को तैयार हो जाता है। उसे अपने पर भरोसा है। साथियों की वह जरा भी चिन्ता नहीं करता है।

४. शरणागत भावना—राजपूत जिसे वचन देते है अन्तिम श्वास तक उसे पालते हैं। यही सब कुछ ठाकुर ने कर दिखया है। वह रज्जब को अपना शरणागत मानकर उसकी रक्षा करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ठाकुर डाकू होते हुए भी एक आदर्श पुरुष है। उसके चरित्र अनुकरणीय हैं।

प्रायश्चित

(लेखक—श्री भगवती चरण वर्मा)

प्रश्न २८ 'प्रायश्चित' कहानी के लेखक का परिचय देते हुए कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—लेखक परिचय—कहानीकार श्री भगवती चरण वर्मा जी का जन्म शफीपुर उन्नाव में हुआ। वर्मा जी ने प्रयाग विश्व विद्यालय से बी० ए० करने के बाद एल० एल० बी० परीक्षा उतीर्ण की। इनका मन वकालत में जरा भी न लगता था। इसके विपरीत साहित्य क्षेत्र में कूद पड़े। वर्मा जी उपन्यासकार तथा कहानीकार के साथ साथ एक उच्च-कोटि के कवि भी हैं। कवि के रूप में आप प्रगतिवादी हैं। कहानी में व्यंगात्मक वर्णनों में आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। प्रस्तुत कहानी ढोंग और दिखाने पर करारी चोट है।

सरांश—कवेरी बिल्ली सारे घर में सबसे अधिक प्रेम राम की वहु से करती थी। होने को तो उसका विवाह हो गया परन्तु आयु में वह केवल चौदह वर्ष की ही थी। रामू की वहु को घर का सारा कार्य करना पड़ता था। भूल से कभी भण्डार घर खुला रह जाता तो कभी कभी वह

भण्डार घर में वैठो वैठी ही सो जाती भण्डार घर की चावी उसके पास ही रहती थी पर विल्ली मौका पाते ही कभी दूध का सफाया कर देती तो कभी दही दूध दही आदि वहुत से खाद्य पदार्थ रखती है पर बिल्ली उधर देखती तक नहीं। एक दिन वह सारी खीर ही चट कर गई जो वहु ने रामू के लिए वनाई थी। रामू की वहु पर खून सवार हो गया। उसने विल्ली को मारने की सोची। रामू की वहु ने एक दूध से भरा कटोरा देहरी पर रख दिया। थोड़ी देर वाद विल्ली आई और दूव पीने लगी। मौका हाथ आ गया वहु ने हाथ का पाटा जोर से उस पर दे मारा। वह न हिली न डुली, बस एक दम उलट गई। महरी, मिस्रानी और साथ सभी घटना स्थल पर पहुंच गई। मिस्रानी भोजन वनाने से मना कर देती है जव तक कि वहुरानी प्रायश्चित न करे। क्योंकि उसके विचारानुसार बिल्ली की हत्या ब्रह्म हत्या के वरावर है।

रामू की भाभी यही उचित समझती हैं कि तुरन्त पण्डित को बुलवाया जाये। पण्डित को जव यह खवर मिली तो पूजा करते-करते उठ खड़े हुए। पण्डित राम सुख भी घटना स्थल पर पहुंचे और कार्य आरम्भ हुआ। उन्होंने पत्रा उल्टा और उंगलियां चलाई वह वताता है कि प्रायश्चित के लिये व्रत रखने के साथ-साथ एक सोने की लिल्ली भी वनवाकर दान करनी होगी। रामू की मां से पण्डित इस वात को लेकर वार्तालाप करता है कि कितने तोले की विल्ली वनवाई जाये। पण्डित जी कहते हैं कि वह दो घण्टे में सोने की विल्ली बनवा लाएगें। तव तक पूजा का प्रबन्ध करो। तभी महरी आकर वताती है कि विल्ली तो उठकर भाग गई।

प्रश्न २६—"प्रायश्चित" कहानी की आलोचना कीजिये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी द्वारा वर्मा जी ने पण्डितों के झूठे वहकावों का कच्चा चिट्ठा खोल कर सामने रख दिया है। कहानी में नवीनता के साथ-साथ रूढ़ियों का खण्डन किया है। कहानी में निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य है—

शीर्षक—कहानी लिखी ही गई है शीर्षक को लेकर। कहानो का अन्त भी शीर्षक आर्थात् "प्रायश्चित" शब्द के आधार पर ही किया है। इस प्रकार

उक्त शीर्षक सारगर्भित सोने के साथ साथ संक्षिप्त है।

कथानक--प्रस्तुत कहानी में केवल एक ही घटना को आधार बनाया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में एक के बाद एक घटनाओं के सूत्र न होने से कहानी में निरन्तर प्रवाह बना रहता है। कहानी का कथानक रोचक एवं प्रभावोत्पादक है।

उद्देश्य—जैसा कि प्रत्येक कहानी का कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। इस प्रकार इस कहानी का भी उद्देश्य है। और व उद्देश्य यह है कि वेचारे भोले भाले लोग पण्डित लांगों के झूठे प्रपंचों में न फसे।

कथोपकथन—संवादों में एक चुभता हुआ हल्का व्यङ्ग है। कहीं-कहीं तो तो संवाद में बड़ी ही चटकीला पन है। यथा--

"यह तो पण्डित जी ठीक कहते हैं। पण्डित जी की तोंद तो देखो।

\+ \+ \+ \+

"मां जी बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है। हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहु के हत्या रहेगी। "इस संवाद में स्वाभाविकता देखते ही बनती है। एक साधारण स्त्री का यह कथन बड़ा प्रभावोत्पादक तथा सजीव हैं।

भाषा—"प्रायश्चित" कहानी में सरल शब्दों का चयन किया गया हैं। भाषा बिल्कुल पात्रानुकूल होने के कारण सजीव है लोभी परसुख का चित्रण सजीव है। भाषा सरल होते हुये भी कड़ी चोट करती है।

अन्त--कहानी का अन्त शिक्षाप्रद है कि पण्ड़ितों के झूठे बहकावों में आ जाना मूर्खता है पण्डित जी सोचते थे कि चलो अच्छे यजमान मिले। परन्तु कहानी बड़े ही सुन्दर ढंग से महरी के कथन द्वारा—"मां जी, बिल्ली तो उठकर भाग गई" समाप्त की गई।

अपना अपना भाग्य

(लेखक--श्री जैनेन्द्र कुमार)

प्रश्न ३०--जैनेन्द्र कुमार का संक्षिप्त परिचय देते हुए 'अपना अपना भाग्य" कहानी का सारांश लिये।

उत्तर--प्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र जी का जन्म अलीगढ़ में सन् १६०५

ई० में हुआ था । शिक्षा का श्री गणेश जैन गुरुकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनापुर में हुआ था । बचपन से ही जैनेन्द्र जी दिल्ली में आकर रहने लगे थे । स्वतन्त्रता आन्दोलन में इन्होने डटकर भाग लिये । कालेज क. पढ़ाई छोड़कर सन् १९२२ में आपने जेल यात्रा की । जेल में रहकर ही जैनेन्द्र जी ने लिखना आरम्भ किया । आपकी सर्वप्रथम कहानी 'खेल' का प्रकाशन विशाल भारत में सन् १९२८ में हुआ था । आपने भाषा की दृष्टि से कहानी में नवीनता का संचार किया है ।

सारांश:—नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी । दो मित्र सड़क की एक बैंच पर बैठे हैं । किश्तियां अपना सफेद पाल उड़ाती हुई अंग्रेज महानुभावों को सैर करा रही था । कुछ साहब मछलियां पकड़ रहे थे । कुछ अंग्रेज रमणियां भी वहां जा रही थी । वे कभी घोड़ों पर बैठती, तेज दौड़ती कभी थक कर धीरे-धीरे चलने लगती । लोक लज्जा में सिमटी कुछ भारती नारियां भी सड़क के किनारे पर चल रही थीं ।

रात अधिक हो जाने के कारण उन दो मित्रों को सड़क पर इक्का दुक्का आदमी ही नजर आता था । ११ बज चुके थे वे दोनों मित्र भी अपने अपने होटलों के लिए चल दिए ।

चलते-चलते दोनों के कोट ओस की अधिकता के कारण भीग गये । वे रात एक बजे इस भीषण ठण्ड में एक बैंच पर बैठ गए । तभी उन्हें अपनी ओर एक काली सूरत दिखाई दी । उन्होंने देखा सामने एक लड़का मैली कमीज लटकाए नंगे पैर और नंगे सिर उनके सामने खड़ा था । लड़का बताता है कि वह एक रुपया रोज और जूठे खाते पर नौकरी किया करता था और आज उसे नौकरी से हटा दिया गया है । लड़का घर से भाग कर आया हुआ है वह सुबह से भूखा है और उसके पास रहने को भी स्थान नहीं है । मित्र उसे होटल में ले जाते हैं और अपने अन्य मित्रों से उसे नौकर रखने को कहते हैं । वे मना कर देते हैं । एक मित्र ने जेब में हाथ डाला तो खाली मिली । वे उसे अगले दिन आने को कहते हैं ।

दूसरे दिन वह निश्चित समय पर होटल नहीं आया । दोनों मित्र यात्रा समाप्त करके लौट रहे थे । उन दोनों को समाचार मिला—पिछली रात'

एक पहाड़ी बालक, सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुर कर मर गया। मित्रों ने सुना और सोचा—"अपना-अपना" भाग्य।

प्र० ३१—"जैनेन्द्र जी" की कहानी कला "अपना-अपना भाग्य" कहानी के आधार पर बताइये।

अथवा

अपना-अपना भाग्य कहानी की आलोचना कीजिये।

उत्तर:—"अपना-अपना भाग्य" के लेखक 'जैनेन्द्र जी" हिन्दी जगत के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। कहानी में मनोविश्लेषण प्रस्तुत करने में सिद्ध हस्त हैं। "अपना-अपना भाग्य" कहानी की श्रेष्ठता निम्न प्रकार देखी जा सकती है:—

शीर्षक:—कहानीकार ने शीर्षक चुनने में अपने कला चातुर्य का परिचय दिया है। तीन शब्दों के इस शब्द में एक भटकती श्वांश छिपी हुई है। और छिपी हुई किसी अधखिले पुष्प की महक। "अपना-अपना भाग्य शीर्षक में किसी टूटे हुए उर की ध्वनि झकृत होती है। अतएव उक्त शीर्षक संक्षिप्त एवं प्रभावोत्पादक तथा अर्थपूर्ण है।

कथानक:—दो मित्रों को एक लड़का मिलता है। वह गरीब है। उसकी नौकरी छूट गई है। वे उसे अगले दिन होटल में बुलाते हैं। परन्तु वह चला जाता है दूर बहुत दूर अनन्त में। बस इतनी सी घटना है। परन्तु कथानक इतना प्रभावोत्पादक है कि कहीं-कहीं तो पाठक की आंखों में आंसू आ जाते हैं।

कथोपकथन:—यद्यपि कथोपकथन सरल है परन्तु वे सीधे पाठक के मर्म पर चोट करते हैं। प्रस्तुत कहानी के संवाद पूर्णतया पात्रों के चरित्र में विकास करते हैं। संवादों के द्वारा ही घटना क्रम चलता रहता है और निरन्तर कथानक का विस्तार होता रहता है।

संवादों के निम्न उद्धरण दृष्टव्य हैं:—

"ए"

"तू कहां जा रहा है ?"

"कहां सोएगा ?"

यहीं कहीं ?"

"कल कहाँ सोया था ?"

"दुकान पर !"

आज क्यों नहीं ?"

' नौकरी से हटा दिया।

उपर्युक्त संवादों में स्वाभाविकता इतनी है पाठक पढ़ते ही तुरन्त समझ जाता है कि लड़का कल तक नौकरी करता था। आज हटा दिया गया है।

उद्देश्य—प्रस्तुत कहानी साम्राज्यवादी अङ्गरेजों के काले कारनामों का खुला चिट्ठा है। लेखक का उद्देश्य गोरों की क्रूरता तथा गरीब लोगों की आहों से परिचित कराना है।

भाषा शैली—शैली की दृष्टि से कहानी मनोवैज्ञानिक है। भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। साधारण बोल-चाल की भाषा का लेखक ने सुन्दर ढ़ंग से प्रयोग किया है।

पात्रों का चयन तथा चरित्र चित्रण—सारी कहानी में तीन पात्र ही मुख्य कार्य करते हैं। अतएव पात्रों की संख्या सीमित होने से यह कहानी अत्यधिक सफल रही है। लेखक ने प्रत्येक पात्र का चित्रण भी सुन्दर एवं स्वाभाविक रूप में किया। दोनों मित्र सहृदय हैं। लड़के की दीनता प्रत्येक पाठक रोने के लिये वाध्य कर देती है। भारतीयों के दिखाने को इस कहानी में बताया गया है। अङ्गरेज स्त्रियों की क्रूरता तथा भारतीय नारियां की लज्जा आदि भावों का चित्रण लेखक ने बड़े ही स्वाभाविक ढ़ंग से किया हैं।

—::—

मीरा मां

(लेखक-चतुर सेन शास्त्री)

प्रश्न ३२—आचार्य चतुर सेन जी का परिचय देते हुए कहानी का सारांश बताइये। कहानी में छिपी भावना को उद्घाटित कीजिये।

उत्तर—परिचय—उपन्यास और कहानी दोनों ही क्षेत्रों में आचार्य जी का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म १८९६ ई० में कानपुर के एक साधारण परिवार में हुआ था। ये दिल्ली में रहकर वैद्य के कार्य के साथ-साथ साहित्य साधना भी किया करते थे। इनकी कहानियों में रोचकता एवं प्रभावोत्पादकता सरीखे गुणों का सुन्दर मिश्रण है। शास्त्री जी हिन्दी के प्रसिद्ध शैलीकार थे। उनकी शैली में तीव्र प्रवाह है। पात्रों का चित्रण इतना सुन्दर है कि भुलाएँ तो भी भूल नहीं सकते हैं।

सारांश - भक्त रैदास अपनी दुकान पर बैठे पद गुनगुनाते जाते और जूते में टांका लगाते जाते। कुछ युवक उनके निकट बैठे उनसे कुछ प्रश्न कर रहे हैं। तभी दूर से मधुर कण्ठ में एक स्वर लहरी सुनाई पड़ती है। जयघोष हो रहा है भक्त राज देखते हैं कि एक देवांगना अर्ध निमिलित नेत्र वाली, गौरवर्णी अद्भुत नृत्य करती उधर ही आ रही है। न वह कोई अलंकार पहने है न पांवों में जूते।

भक्त राज ने हर्ष से विक्षिप्त हो कर कहा, अरे। यह तो मीरा मां है। वे दोनों हाथ उठाये पागलों की तरह "मीरा मां मीरा मां !" कहकर भीड़ में घुस गये। मीरा ने भक्त राज की ओर स्नेह से देखा। रैदास अब भी सावधान न थे। वे 'मीरा मां' 'मीरा मां' करके नाच रहे थे। दोनों भक्त शिरोमणी एक दूसरे के पैर स्पर्श करने का प्रयास कर रहे थे। तत्पश्चात् रैदास अपने आसन पर आ बैठे। मीरा सामने चटाई पर बैठ गई।

अन्त में मीरा ने संकेत किया। दासियों ने स्वर्ण मुद्राओं से भरे दो थाल गुरुवर को भेंट किये। भक्त प्रवर बोले मां ये स्वर्ण मेरे किस काम के हैं ? मैं तो दो जोड़ी जूते आसानी से बना लेता हूं। एक जोड़ी बेचकर परिवार का पालन करता हूं। दूसरी जोड़ी बेचकर साधु सन्तों में बांट देता हूं। मीरा के संकेत से दासियों ने धन साधु सन्तों में वितरित कर दिया। जनता फिर 'जय मीरा' जय गुरु रैदास भक्त' चिल्ला उठी।

मूल भावना—जाति प्रथा का ऊंच नीच समाज के माथे पर कलङ्क है।

छुआछूत का बहिष्कार करना है शास्त्री जी ने अपनी इस कहानी का उद्देश्य बनाया है। मीरा का सम्बन्ध राणा परिवार से है तो भी यह भक्त प्रवर रैदास के चरण स्पर्श करती है। वह रैदास को बताती है कि कोई मनुष्य जन्म से ऊंचा या नीचा नहीं होता है अपितु उस मनुष्य की प्रवृत्तियां। जाति प्रथा को तोड़ने का प्रयास लेखक ने प्रस्तुत कहानी में मीरा तथा रैदास को माध्यम बना कर प्रस्तुत किया है। बुरे व्यक्ति तब तक बुरे ही बने रहेंगे जब तक हम घृणा सरीखा पाप करते रहेंगे। अतएव नीचता दूर करने के लिये नीच को बुरा न समझ कर उसकी नीचता जो कि वास्तव में एक बुराई है दूर करने का प्रयास करें।

निंदिया लागी

(लेखक:—श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी)

प्र० ३३—वाजपेयी जी का परिचय देते हुए 'निंदिया लागी' कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर:—परिचय:—नाटक उपन्यासकार और कहानीकार तथा कविवर वाजपेयी जी का जन्म कानपुर के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में सन् १८६६ वि० में हुआ। किन्हीं कारणों से वाजपेयी जी स्कूल में 'मिडिल से अधिक नहीं पढ़ सके। इसके बाद आप अपने ही गांव की एक पाठशाला में अध्यापक हो गये। नौकरी छोड़कर आप कानपुर आ गये। वहां होम रूल लाइब्रेरी में कार्य करने लगे। यहीं से आपने हिन्दी साहित्य का अध्ययन आरम्भ किया। आरम्भ में आपने कविता का क्षेत्र अपनाया। परन्तु संघर्षों ने दिशा बदल दी और आपको प्रसिद्ध गद्यकार बना दिया "माधुरी" पत्रिका में आपकी सर्व प्रथम कहानी का प्रश्न सन् १६४२ में हुआ था। अब तक वाजपेयी जी १५ उपन्यास, एक नाटक तथा १५ अन्य पुस्तकों का प्रकाशन कर चुके हैं।

हिन्दी के श्रेष्ठ कहानी लेखकों में आपका विशेष स्थान है।

सारांश:—बैनी ब बू एक लम्बे कद के, गौरवर्ण के गम्भीर व्यक्ति थे। वे मझले भैया के सहपाठी थे उनकी देख-रेख में एक बंगला बन रहा था। एक दिन छत कूटी जा रही थी कूटने वालों में स्त्रियां अधिक थीं। वे कोई गीत गा रही थीं। सब स्वरों में एक कोमल स्वर भी था। मकान मालिक युवक का ध्यान भी इस ओर गया। उनके मन में प्रश्न उठा कि जिसकी ध्वनि इतनी मधुर है वह रूपवान भी है अथवा नहीं। बेनी बाबू और युवक घूमते-घूमते वहां पहुंच गये जहां स्त्रियां गीत गारही थीं। दोनों को देख कर स्त्रियों ने गीत बन्द कर दिया। बेनी बाबू ने इधर उधर देखा और कहा छत को एक साथ मिल कर पीटो और पिटाई का काम आज खत्म हो जाना चाहिये।

वे दोनों एक पेड़ के नीचे कुर्सियां डलवा कर बैठ गये। युवक ने बातों ही बातों में बेनी बाबू को बताया कि उसे बीच का स्वर बड़ा प्रिय लगा। बेनी बाबू बोले जाओ न नजदीक से सुन आओ युवक जैसे ही स्त्रियों के निकट पहुंचा गीत रुक गया और स्त्रियां और अधिक तेजी से कार्य करने लगीं। युवक ने कहा—'तुम लोगों ने गाना क्यों बन्द कर दिया।" वे सबकी सब हंस पड़ीं। किसी ने कहा "गा री गा पत्ती चुप क्यों हो गई।" युवक सुमधुर स्वर का नाम। जान गया था वह बेनी बाबू के पास गया।

बेनी बाबू को युवक ने सब कुछ बता दिया। वे बोले—"अगर आज यह काम पूरा न हो कल करवा डालना, छत की कुटाई का काम पूरा तो हो गया पर एक बड़ी दुर्घटना हो गई। सीढ़ियों की दीवार गिर जाने से पत्ती का देहान्त हो गया तथा उसका पति घायल हो गया।

उस बंगले को फिर बेनी बाबू नहीं बनवा सके। काम बन्द रहा। वे बीमार पड़ गये। वे एक पलंग पर लेटे हुए थे बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। पास एक नौजवान बैठा हुआ था। नौकर ने उठाया और उनके पीछे तकिया लगा दिया। वे बोले "बोलो तुम कितने रुपये पाकर खुश हो सकते हो लेकिन तुम यह सोचने की भूल न करना कि यह तुम्हारी स्त्री की कीमत है। तुम

बच्चे की परवरिश के लिये हर पहली तारीख को दस रुपये ले जाया करना ।

यह कथा यहां समाप्त हो गई । युवक अपने बंगले में रहने लगा । कभी-कभी उस रात के सन्नाटे में पत्तो का स्वर सुनाई पड़ता है ।

"निंदिया लागी......?

प्र० ३४—निंदिया लागी कहानी की आलोचना कीजिये ।

उत्तरः—निंदिया लागी उर की वीणा के तारों को झंकृत करती सी प्रतीत होती है । प्रस्तुत कहानी में निम्न विशेषताएं विशेष रूप से दृष्टव्य हैं:—

शीर्षक:—"निंदिया लागी" कहानी का शीर्षक अपने में रहस्य छिपाए हुए है । पाठक के मन में शीर्षक को पढ़ते ही उत्सुकता का जागरण होता है जो आदि से अन्त तक बनी रहती है । शीर्षक संक्षिप्त है और प्रभावोत्पादक है ।

कथोपकथन:—कथोपकथन सर्वत्र ही पाठकों के चरित्र में विकास करते दिखाई पड़ते हैं । निम्न कथन युवक के चरित्र की विशेषता को प्रगट करता है:—"लड़ो मत । मैं चला जाता हूं । " वेनी बाबू कितने सज्जन एवं दयालु व्यक्ति हैं । उनके एक ही संवाद से प्रगट हो जाता है:—"अच्छा एक काम कर आओ । रामलखन से कहना, अगर आज यह काम किसी तरह पूरा न दीख पड़े, तो कल ही पूरा कर डालना ठीक होगा । वेनी बाबू से मैंने कह दिया है कि मजदूरो से उतना ही काम लिया जाये, जितना वे कर सकें ।

उपर्युक्त प्रसंगों से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत कहानी के संवाद पात्रानुकूल प्रभावोत्पादक तथा रोचक है ।

उद्देश्य:—कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी द्वारा दिखाया है कि एक नारी के सुमधुर स्वर के साथ-साथ वह सुन्दर भी हो सकती है । प्रत्येक हृदय वाला व्यक्ति अवश्य ही पत्ती की दुखद घटना सुनकर रो उठेगा । कहानी का एक उद्देश्य यह भी रहा है कि मजदूरों से उतना ही कार्य करवाया जाए जितना कि वे कर सकते हैं ।

कथानक:—आर्थिक तथा सामाजिक उत्पीड़न के ताने बाने मे कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी को आधुनिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

भाषा शैली:—भाषा में माधुर्य एवं ओज दोनों गुण हैं। साधारण वोल चाल की भाषा में कहानी को वड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। शैली सुगम एवं सुवोध है।

पात्रों का चयन तथा चरित्र चित्रण:—चार पात्र ही प्रधान पात्रों के रूप में पाठकों के सम्मुख आते हैं वेनी वावू कहानी के नायक हैं। नायिका है पत्ती। दोनों ही पात्रों को अपनी कला से वड़े ही सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया हैं। वेनी वावू एक कुशल कार्य कर्ता हैं। वे जानते हैं कि मजदूरों से किस प्रकार कार्य करवाया जा सकता है। वे एक सफल मनोवैज्ञानिक भी हैं तभी तो युवक के मन की वातं जानकर वे कहते हैं:—"जाओ न नजदीक से जाकर सुन आओ। हैंट यहां रख जाओ। वेनी वावू जानते हैं कि नारी कितनी लज्जाशील होती है। तभी तो वे कहते हैं:—'फिर भी अगर वे गाना वन्द कर दें तो कहना, काम में हर्ज नहीं होना चाहिये, क्योंकि गाने के साथ छत कूटने का काम अच्छा होता है" इस प्रकार वेनी वावू दयालु, मजदूरों को उचित मजदूरी देने वाले एक महामानव हैं।

अन्त:—पत्ती की मृत्यु के पश्चात् कहानीकार चाहता तो कहानी समाप्त कर सकता था। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। कथानक थोड़ा और विकसित करके वेनी वावू के प्रति पाठकों द्वारा सहानुभूति प्रगट करवा दी है।

इस प्रकार सर्वगुण सम्पन्न निंदिया लागीं कहानी हिन्दी कहानियों में श्रेष्ठ है।

———

मेरी जीत

(लेखक—श्री यशपाल)

प्र० ३५—"मेरी जीत" कहानी का सारांश देते हुए इसमें व्यक्त भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सारांश–मिसेजसाहनी रसोई में काम में लगी थी। मिस्टर साहनी आफिस गये हुये थे। तभी काल वैल बजती है एक बूढ़ा आगे बढ़कर चिट दे देता है। उसके b'स एक प्यारा सा कुत्ते का पिल्ला भी है। श्रीमती साहनी को पिल्ला बहुत अच्छा लगता है वह पूछती है 'क्या लोगे ?' उत्तर मिला पांच रुपये। खैर पिल्ला चार रुपये देकर ले लिया जाता है। पिल्ले के लिये एक चटाई बिछाकर उसके ऊपर फटे कम्बल का एक टुकडा बिछाया। उसके आगे एक कटोरी में दूध रखा गया। सूरज डूब गया। घर में कदम रखते ही साहब ने त्योरियां चढ़ा कर पूछा—'यह क्या है ?" उत्तर मिला—"पिल्ला' पर वे उसे रखने को राजी नहीं हुए।

रात भर पिल्ला कूंकूं करता रहा। आफिस जाते समय साहनी साहब बोले मैं आज खाना नहीं खाऊंगा। वाद में मिसेज साहनी ने उस पिल्ले एक माली को सौंप दिया तथा उसके पालन के लिये रुपये देती रही।

एक दिन मिसेज साहनी पिल्ले से खेल रही थी। अब वह बड़ा हो गया था। एकाएक साहनी बाबू आ गये। मिसेज साहनी घबरा गई। साहनी साहब बोले—'यह क्या ?' और मंगा लिया ? मिसेज साहनी ने कहा और नहीं यह वही तो पिल्ला हैं माली के यहां रख दिया था। साहब बिना कपड़े बदले लेट जाते हैं। वे पिल्ले की ओर टकटकी बांधे देख रहे हैं। मिस्टर साहनी बोले—'मुझे मालूम न था कि तुम पिल्ले को इतना चाहती हो और उसके बिना न रह सकोगी। पिल्ला यहीं रहेंगा। और वे उसे प्यार करने

लगे। श्रीमती साहनी स्नानगृह में काफी देर तक रोई। वे जीत जाती हैं परन्तु वे सोचती है कि यदि स्त्री जीतना चाहती है तो उसका उपाय है हारते चले जाना।

मूल भावना--एक सुखी परिवार कैसे बनाया जा सकता है लेखक ने मिस्टर तथा मिसेज साहनी को माध्यम बनाकर समझाने की चेष्टा की है। गृहस्थ जीवन को इस कहानी में बड़े ही अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया गया। है परिवार में सुख और शान्ति के लिये नारी को सदैव त्याग के लिये तैयार रहना चाहिये। यदि मिसेज साहनी अपनी ही बात पर अड़ी रहती तो दो व्यक्तियों के बीच गहराइयां बढ़ती जाती। परन्तु सद्गृहणी का कर्त्तव्य है कि वह परिवार को समृद्ध बनाने के लिए आत्म-समर्पण कर दें। इस समस्या को जो कि आज कल अनेक परिवारों में कलुष का कारण बनी हुई है लेखक ने कहानी के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अन्त में उन्होंने अपना भाव पूर्णतया स्पष्ट भी कर दिया है।

"स्त्री यदि जीतना चाहती है तो उसका उपाय है हारते चले जाना। उसकी अपनी इच्छा कोई न हो···उसकी अपनी राय कोई न हो तो वह सुखी रह सकती है। परन्तु यह सुख और जीत कैसी ? ऐसी कि जीतने की इच्छा कभी न करे······अपने को कुछ न समझे।"

उपर्युक्त भाव को ही लेखक ने प्रस्तुत करने का सुन्दर प्रयास किया है। नारी का आदर नहीं हो रहा है इस आशय को प्रगट किया है मिस्टर साहनी के कथन से वे दफ्तर जाते समय कह जाते हैं कि वे खाना नहीं खायेंगे। परन्तु क्यों ? केवल इसलिये क्योंकि उसकी पत्नी को इच्छा है कि वह पिल्ला पाले परन्तु वे नहीं चाहते और वेचारी मिसेज सब कुछ सहते हुए भी पति आज्ञा मान कर मूक हो जाती है।

प्रश्न० ३६—श्री यशपाल जी की कहानी। कला की समीक्षा कीजिये

उत्तरः—श्री यशपाल हिन्दी जगत् में एक ऊंचा स्थान रखते हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी की भांति यशपाल जी का साहित्य क्षेत्र काफी व्यापक है। इन्हें उपन्यास तथा कहानी दोनों ही क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई है। जीवन के विभिन्न रूप प्रतिविम्ब रूप में इनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। आपका जीवन के प्रति एक अनूठा दृष्टिकोण है। सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं का समाधान यशपाल जी बड़े ही सुन्दर ढंग से करते हैं।

यशपाल जी यथार्थता पर विश्वास रखते हैं। कृत्रिमता से वे कोसों दूर हैं। आपकी कहानियों में मुख्यतः सामाजिक स्थिति को उठाना और उसका हल प्रस्तुत करना सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आपकी शैली तथा चरित्र चित्रण की परिपाटी नितान्त नवीनता लिए हुए है। कहीं भी इनकी कला में दुरूहता अथवा उलझाव नहीं होता है। यथार्थ को यशपाल नग्न रूप में ही पाठकों को दिखाते हैं। प्रेमचन्द जी की तरह वे उस पर आदर्शवाद का आवरण डालने का प्रयास नहीं करते हैं पात्रों का चित्रण करते समय यशपाल जी शब्दों की तूलिका और भावों के रंगों से बड़े ही स्वच्छ एवं सुन्दर रूप में प्रस्तुत करते हैं। रूढ़िवादिता के आप विरोधी हैं। यह लक्षण प्रायः आपकी सभी रचनाओं में देखा जा सकता है। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों का अपने पात्रों द्वारा अपनी कृतियों में खुल कर विरोध कराते हैं। वर्ग संघर्ष का चित्रण करते समय यशपाल मनोभावों को बड़े ही मार्मिक रूप में पाठकों के सामने रखते हैं। प्रत्येक पाठक इनकी सभी कहानियों में खो सा जाता है।

भाषा के मामले में यशपाल जी कट्टर पन्थी नहीं। शब्दों का चयन पात्रानुकूल एवं वातावरणानुकूल ही करते हैं। वाक्य संक्षिप्त होते हैं। कहीं कहीं पुर्जा, जात आदि उर्दू के शब्द भी प्रयुक्त कर लेते हैं। संक्षेप में भाषा इनकी प्रौढ़ है और शैली सशक्त।

डाची

(लेखकः—उपेन्द्रनाथ अश्क)

प्रश्न ३७:—डाची कहानी का सारांश लिखिए।

सारांशः—बाकर शिकन्दर गांव का रहने वाला मुसलमान जाट था।

वह चौधरी नन्दू के पास डाची खरीदने गया। चौधरी ने पूछा कौन सी डाची लोगे। बाकर ने बताया पहली से चौथी। बात तब तय हो गई १६०) रुपये पर। १५०) रुपये तो उसके पास थे ही उसने सोचा १०) रुपये उधार ला दूंगा पर चौधरी १५०) रुपये पर ही राजी हो गया। बाकर डाची को लेकर चल दिया। वह तेज कदमों से चलने लगा कहीं रजिया सो न जाये।

बाकर के पूर्वज कुम्हार का कार्य किया करते थे। किन्तु उसके पिता ने अपना पैत्रिक काम छोड़ कर मजदूरी करना ही शुरू कर दिया था। बाकर भी इसी कार्य में अपने कुटुम्ब को पालता था। पांच वर्ष हुए उसकी प्यारी पत्नी सुन्दर गुड़िया सी लड़की रजिया को छोड़कर परलोक सिधार गई। मरते समय उसने कहा था—"मेरी रजिया अब तुम्हारे हवाले है। इसे कष्ट न देना। उसने इस कारण से विवाह भी नहीं किया कि कहीं बच्ची को सौतेली मां परेशान करे। वह रजिया को हर तरह खुश रखता था।

एक दिन प्यारी रजिया बोली—"अब्बा, हम तो डाची लेंगे, अब्बा हमें डाची ला दो। रजिया ने यह जिद् मशीरमल की डाची देख कर की। पहले उसने रजिया को टाल दिया पर मन ही मन उसने डाची लाने की प्रतिज्ञा की। बहन उससे नाराज रहती क्योंकि वह पैसे इकट्ठे करने के लिए ज्यादा से ज्यादा काम किया करता था।

बीती हुई स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क पटल पर आ जा रही थी। मशीरमल की कोट तक जैसे ही वह पहुँचा कि सांझ घिर आई। वह नानक बढ़ई को डाची की काठी बनाने के लिए कह गया था। वह काठी लेने के लिये रुका। उसने नानक के घर पर जा कर उसे आवाज दी। अन्दर से उत्तर मिला घर में नहीं हैं मन्डी गये हुए हैं। उसने सोचा मशीरमल से काठी ली जाये। वह वहां पर गया। मशीरमल महोदय डाची को देखते ही मोल लेने को तैयार हो गये। महोदयवर ने साठ रु० उसके हाथ में रक्खे और बाकी फिर ले जाने को कहा। बाकर के हाथ साठ रु० के नोट बेपरवाही से लटक रहे थे और अपनी झोंपड़ी से आने वाली प्रकाश की क्षीण रेखा को निर्निमेष देखता

हुआ इस बात की प्रतीक्षा करह था कि वह रेखा बुझ जाझ जाये, रजिया सो जाये तो वह चुपचाप अपने घर में दाखिल हो।

प्रश्न ३८ डाची कहानी की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी एक घटना विशेष पर अ धारित है। कह नी के तत्वों के आधार पर डाची कहानी की समीक्षा निम्न प्रकार करेंगे।

शीर्षक—कहानी का शीर्षक "डाची" संक्षिप्त तथा सारगर्भित है। सारी कहानी 'डाची' पर ही आधारित है 'डाची, शब्द स री कहानी की धुरी है।

कथानक—कई पात्रों को चुनने के कारण नथानक कहीं शिथिल सा हो जाता है। परन्तु यह कभी घटना विशेष को सजीव करने के लिये ही की गई है। वैसे कथानक में कई घटनाओं को स्थान दिया गया है और प्रायः सभी अक्रम से रक्खी गई हैं इसी से पाठक को कहानी पढ़ने में जरा कठिनाई अनुभव होती है तो भी लेखक ने कथानक में संगठन लाने का काफी प्रयास किया है।

उद्देश्य--दीन हीन दशा का चित्रण इसमें बड़ी ही सुन्दरता से किया गया है। बाकर से जब मशीरमल महोदय डाची लेते हैं तो वह कहता हैं— "हूं जू" अभी तो मेरा चाव भी पूरा नहीं हुआ और लेखक ने बता दिया वह चाव कभी पूरा हो ही न सका।

आदि और अन्त—कहानी का पूर्वार्द्ध प्रत्येक पाठक को प्रभावित करता है। पाठक के मन में आरम्भ से ही अन्त जानने की उत्सुकता लगी रहती है। इसी प्रकार कहानी को दुखान्त बनाकर लेखक ने पाठकों के हृदयों को जीत लिया।

भाषा और शैली—प्रस्तुत कहानी घटना प्रधान है। लेखक ने विशेष रूप में वर्णन शैली को अपना है। शैली यद्यपि सरल है और प्रभावोत्पादक है। परन्तु भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत कहानी में कहीं कही कुछ अवरोध सा आ

जाता है। पंजावी भाषा का वाहुल्य होने के कारण साधारण पाठक तो क्या पढ़ा लिखा पाठक भी नहीं समझ सकता है। कहीं कहीं तो पूरे के पूरे वाक्य ही पंजाबी के आ गये है। इस प्रकार पंजावी शब्दों की भरमार से कहानी का सौन्दर्य कुछ विनिष्ट सा हो जाता है। यथा—

"आ सांड सांड सारी रहेड़ी है, तू इन्हें रहेड़ में ईन गेर दई।

× × × ×

"सांड तो मेरी दो सौ की है पण जा सागी मोल मियां तले दस छां डियां।"

भाषा में एक त्रुटि है मशीरमल और नन्दू चौधरी तो पंजावी न होते हुए भी पंजावी वोलते हैं परन्तु वाकर पंजाबी होते हुए भी पंजावी नहीं वोलता। इस प्रकार से कहानी में कुछ कृत्रिमता दृष्टिगोचर होती है।

कथोपकथन--कथोपकथन की दृष्टि से डाची कहानी सफल हुई है। पात्रानुकूल एवं वातावरणानुकूल कथोपकथन प्रयुक्त होने में कहानी में रोचकता एवं प्रवाह आ गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भाषा की शिथिलता के अतिरिक्त कहानी में अन्य सभी विशेषतायें है। डाची कहानी एक उत्तम वर्णात्मक कहानी कही जा सकती है।

मास्टर साहब

(लेखक—श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार)

प्र० ३९—'मास्टर साहब' कहानी के आधार पर इसके कहानीकार की कहानी कला की विवेचना कीजिये।

उत्तर— विद्यालंकार जी में कहानी लेखक की अपेक्षा समालोचक होने की प्रतिभा अधिक है। प्रस्तुत कहानी से पता चलता है कि आप एक अच्छे कहानी लेखक भी है।

"मास्टर साहव" कहानी का आरम्भ पढ़ते ही तुरन्त ज्ञात सो जाता है कि उक्त कहानी में किसी व्यक्ति की स्मृतियां एकत्रित करके सजोंदी गई हैं। विनायक इस समय एक प्रतिष्ठित कालेज का प्रिन्सिपल है उसने अध्ययन भी उसी में किया था। अन्तर सिर्फ इतना हो गया है कि जब विनायक यहां पढ़ता था उस समय यह एक छोटा सा स्कूल था जो समय के साथ वह वृक्ष बना खड़ा है। उसके मस्तिष्क पटल पर मास्टर साहव का चित्र उभर आता है।

मास्टर साहव भूगोल के अध्यापक थे। भूगोल में अपनी कक्षा में सदैव ही विनायक प्रथम रहा करता था। अतएव उसे ही मानीटर बनाया गया था। विनायक को लड़के चूहां-चूहां कह कह चिढ़ाया करते थे जब मास्ठर को पता चलता तो वे ऐसे छात्रों को कड़ा दण्ड देते थे एक दिन विनायक स्कूल की सीढियों से गिर गया। रक्त बहने लगा। मास्टर साहव ने अपनी नई धोती फाड़कर पट्टी वांध दी। मास्टर साहव में एक अवगुण था वे नित्य ही देर से आया करते थे।

विनायक १०-१२ वर्ष इलाहवाद रह कर फिर उसी स्कूल में लौट आया है। उसने एम० ए० की परीक्षा पास करली है वह अब यहां मुख्याध्यापक के पद पर कार्य कर रहा है। स्कूल से कालेज होने पर वह यहां का प्रिंसिपल वन गया है। परन्तु प्रिंसिपल हो जाने पर भी वह मास्टर स हव कां उतना ही आदर करता है जितना वह पहले किया करता था। मास्टर साहव भी उसे पहले प्रधानाचार्य की तरह ही समझते हैं। शे अब भी पहले की तरह ही हेडमास्र की फटकार सुनने को सौसभी वुखार में कुनीन पीने की तरह से आवश्यक समझते हैं।

गरमी का मौसम था। जी सोने को चाह रहा था। वाहर आकर विनायक ने देखा कि मास्टर साहव कुर्सी पर बैठे ऊंघ रहे हैं। उनके सामने चौथी कक्षा के लड़के शोर मचा रहे थे।

कुछ लड़के हाथा पाई भी कर रहे थे। दो एक क्षण तक उनकी ओर देखते रहकर क्रोध भरे स्वर में विनायक ने कहा—"मास्टर साहव !" वे लजा गए और आंखें नीची किये जमीन की ओर तकने लगे विनायक ने मन में सांचा उसने यह अच्छा नहीं किया।

दोपहर के दो बजे थे विनायक नंगे पांव नंगे सिर पैदल ही माटर साहब से क्षमा मांगने के लिये चल दिया। भीषण गर्मी पड़रही थी पर उसने चिन्ता नहीं की। विनायक ने उनसे क्षमा याचना की उन्होंने उसे गले से लगा लिया इसके पश्चात् विनायक ने उन्हें एक प्रारम्भिक स्कूल में प्रधानाध्यापक बनवा दिया। यद्यपि आज मास्टर साहब इस संसार के निवासी नहीं रहे तो भी उनकी स्मृति सदैव ही उसके मस्तिष्क पटल पर छाई रहती है।

कहानीकार ने एक अध्यापक तथा एक छात्र का चरित्र-चित्रण बड़ी ही कुशलता से किया है। पूरी कहानी में कौतूहल का अभाव है। घटनाओं का पूरा विवरण मिल जाने के कारण पाठक के पास सोचने के लिये कुछ नहीं बचता और इस प्रकार कहानी कुछ नीरस सी हो जाती है। कहानी के अन्त में विनायक कहता है—मेरी सिफारिश के आधार पर उनकी वेतन वृद्धि कर के उन्हें उसी जिले के एक स्कूल का मुख्य अध्यापक बनवा दिया है। "इसी प्रकार बिनायक बताता है कि मास्टर साहब का देहान्त हुए काफी समय बीत गया है। इस प्रकार से इन दोनों बातों का उद्घाटन करके लेखक अपने आप ही पाठकों को सब कुछ बता देता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि "मास्टर साहब" संवाद हीन, उत्सुकता हीन एक संस्मरण ही कहा जा सकता है न कि कहानी।

—::—

गृहस्थी

(लेखक—विष्णु प्रभाकर)

प्र० ४०—गृहस्थी कहानी का सारांश देते हुए इस कहानी की मूल भावना बतलाइये।

सारांश—वीणा गुस्से में भरी हुई बाहर से नित्य की तरह लौटी उसने देखा हेमेन्द्र एक पुस्तक पढ़ने में तल्लीन था। वह एक विचारक एवं बुद्धिमान युवक है। पर वह कोई कार्य नहीं करता है अतएव इस बात के कारण वीणा हेमेन्द्र से अच्छी प्रकार से भी नही बोलती है। वह उसके गुणों के कारण

उसकी बड़ाई तो करती है फिर भी असन्तुष्ट है। खाली प्रशंसा से ही तो पेट नहीं भरा जा सकता है उसके लिए तो आवश्यकता होती है धन की। आय कुछ होती नहीं है और महंगाई का जमाना। परिवार के अतिरिक्त एक दो आदमी और भोजन खाने के लिए आ जाते हैं। मित्र तो आते हैं हेमेन्द्र के और वस्तुएं उधार मांगने के लिए फिरना पड़ता है बेचारी वीणा को।

मदन इस घर का पुराना परिचित है आते ही कहा करता ओ हो भोजन बन रहा है। आज भी बैठक में भीड़ है क्या आज भी कोई दावत हो रही है। जब भी वीणा और हेमेन्द्र में खटापटी होती तो वह सदैव ही वीणा का पक्ष लिया करता था। वह अपना दुख मदन ही को सुनाती थी। सब को खिला कर स्वयं भूखा रहना पड़ता है अक्सर वीणा को। उसने बैठक में आज नारी का स्वर सुना वह बैठक में जाते-जाते रुक गई।

नारी:—"ऐसी हालत में मुझे क्या उसके पास रहना चाहिये।"

हेमेन्द्र—"मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं।"

नारी:—"मैं कल ही आपके पास आ जाऊंगी।"

हेमेन्द्र—मेरे पास ! आपका मतलब मेरे घर।"

नारी:—"मैं घर वर कुछ नहीं जानती। मैं आपको जानती हूं।"

हेमेन्द्र—पर मैं तो कुछ नहीं हूं, जो कुछ है, घर है।"

नारी: —कुछ भी हो।"

"कुछ भी कैसे ?" उसमें अन्तर है। मैं कुछ नहीं हूं, घर है और घर से मतलब है वीणा सो मेरे पास आएगी तो वीणा से कह दूंगा कि वह तुम्हारा प्रबन्ध कर दे। वीणा के बिना मैं कुछ नहीं हूं।"

वीणा सब कुछ समझ गई। वह औरत वहां कई बार आई थी। उसने उसको पहचाना। वह फर्श पर गिर पड़ीं और फफक फफक कर रोने लगी।

मूल भावना:—प्रस्तुत कहानी एक ऐसे परिवार का चित्रण है जिसकी आय कम है परन्तु व्यय अधिक है। वीणा बेचारी इस मध्यमवर्गीय परिवार का बोझ अपने कन्धों पर उठाती है उसे रहना है उसी परिवार में, जाए तो जाए कहां समझेगा उनको कौन यहां, घर से बाहर जाएगी तो

लोग उसे पापिन की संज्ञा देगें। नारी स्वभाव का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत कहानी में देखते ही बनता है। परिवार का बड़ा ही सुन्दर एवं स्वाभाविक चित्रण कर लेखक ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

प्रश्न ४१—गृहस्थी कहानी की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिये।

उत्तर—निम्न के आधार पर विद्यार्थी उत्तर स्वयं लिखें।

(१) सद्‌गृहणी

(२) पतिव्रता

(३) नारी स्वभाव से पूर्ण

(४) गृह कार्य में निपुण

(५) बुद्धिमान

समाप्त

मुद्रक—एल० एस० प्रिन्टिंग प्रेस, सहारनपुर